قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

قَالَ اَلَمْ

पारा - 16

eParah

قَالَ	اَلَمْ	اَقُلْ	لَّكَ	اِنَّكَ	لَنْ	تَسْتَطِيْعَ	مَعِىَ
उसने कहा	क्या नहीं	मैंने कहा था	तुम्हें	बेशक तुम	हरगिज़ नहीं	तुम इस्तिताअत रखोगे	मेरे साथ

صَبْرًا (75)	قَالَ	اِنْ	سَاَلْتُكَ	عَنْ شَىْءٍۢ	بَعْدَهَا	فَلَا
सब्र की	कहा (मूसा ने)	अगर	सवाल करुं मैं तुमसे	किसी चीज़ के बारे में	बाद इसके	तो ना

تُصٰحِبْنِىْ ۚ	قَدْ	بَلَغْتَ	مِنْ لَّدُنِّىْ	عُذْرًا (76)	فَانْطَلَقَا ۫ وقفة	حَتّٰٓى
तुम साथ रखना मुझे	तहक़ीक़	पहुंच गए तुम	मेरी तरफ़ से	उज़्र को	पस वो दोनों चल दिए	यहां तक कि

اِذَآ	اَتَيَآ	اَهْلَ قَرْيَةِۨ	اسْتَطْعَمَآ	اَهْلَهَا	فَاَبَوْا
जब	वो दोनो आए	एक बस्ती वालों के पास	उन दोनों ने खाना मांगा	उसके रहने वालों से	तो उन्होंने इंकार कर दिया

اَنْ	يُّضَيِّفُوْهُمَا	فَوَجَدَا	فِيْهَا	جِدَارًا	يُّرِيْدُ	اَنْ
कि	वो मेहमान बनाएं उन्हें	तो उन दोनों ने पाई	उसमें	एक दीवार	वो चाहती थी	कि

يَّنْقَضَّ	فَاَقَامَهٗ ؕ	قَالَ	لَوْ	شِئْتَ	لَتَّخَذْتَ	عَلَيْهِ
वो टूट गिरे	तो उसने सीधा खड़ा कर दिया उसे	उसने कहा	अगर	चाहते तुम	अलबत्ता ले लेते तुम	इस पर

اَجْرًا (77)	قَالَ	هٰذَا	فِرَاقُ	بَيْنِىْ	وَبَيْنِكَ ۚ	سَاُنَبِّئُكَ
कोई उजरत	कहा	ये है	जुदाई	दर्मियान मेरे	और दर्मियान तुम्हारे	अनक़रीब मैं बताऊंगा तुम्हें

بِتَاْوِيْلِ	مَا	لَمْ	تَسْتَطِعْ	عَّلَيْهِ	صَبْرًا (78)	اَمَّا	السَّفِيْنَةُ
हक़ीक़त	उसकी जो	नहीं	तुम कर सके	जिस पर	सब्र	रही	कश्ती

فَكَانَتْ	لِمَسٰكِيْنَ	يَعْمَلُوْنَ	فِى الْبَحْرِ	فَاَرَدْتُّ	اَنْ	اَعِيْبَهَا
तो थी वो	मिस्कीनों की	जो काम करते थे	दरिया में	तो चाहा मैंने	कि	कि मैं ऐबदार कर दूं उसे

وَكَانَ	وَرَآءَهُمْ	مَّلِكٌ	يَّاْخُذُ	كُلَّ	سَفِيْنَةٍ	غَصْبًا (79)	وَاَمَّا
और था	आगे उनके	एक बादशाह	जो ले रहा था	हर	कश्ती को	ज़ुल्म/जबर से	और रहा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْغُلٰمُ	فَكَانَ	اَبَوٰهُ	مُؤْمِنَيْنِ	فَخَشِيْنَآ	اَنْ	يُّرْهِقَهُمَا
लड़का	तो थे	वालिदैन उसके	दोनों मोमिन	तो डर हुआ हमें	कि	वो तकलीफ़ देगा उन्हें

طُغْيَانًا	وَّكُفْرًا ﴿80﴾ ج	فَاَرَدْنَآ	اَنْ	يُّبْدِلَهُمَا	رَبُّهُمَا	خَيْرًا	مِّنْهُ
सरकशी	और कुफ़्र से	तो इरादा किया हमने	कि	बदल कर दे उन दोनों को	रब उन दोनों का	बेहतर	उससे

زَكٰوةً	وَّاَقْرَبَ	رُحْمًا ﴿81﴾	وَاَمَّا	الْجِدَارُ	فَكَانَ	لِغُلٰمَيْنِ
पाकीज़गी में	और ज़्यादा क़रीब	रहमत में	और रही	दीवार	पस वो थी	दो लड़कों की

يَتِيْمَيْنِ	فِى الْمَدِيْنَةِ	وَكَانَ	تَحْتَهٗ	كَنْزٌ	لَّهُمَا	وَكَانَ
जो दोनों यतीम थे	शहर में	और था	नीचे उसके	एक ख़ज़ाना	उन दोनों का	और था

اَبُوْهُمَا	صَالِحًا ج	فَاَرَادَ	رَبُّكَ	اَنْ	يَّبْلُغَآ	اَشُدَّهُمَا	وَيَسْتَخْرِجَا
उन दोनों का बाप	नेक	तो इरादा किया	तेरे रब ने	कि	वो दोनों पहुंचें	अपानी जवानी को	और वो दोनों निकालें

كَنْزَهُمَا ۖ ق	رَحْمَةً	مِّنْ رَّبِّكَ ج	وَمَا	فَعَلْتُهٗ	عَنْ اَمْرِىْ ط	ذٰلِكَ
अपने ख़ज़ाने को	बतौरे रहमत	तेरे रब की तरफ़ से	और नहीं	किया मैंने उसे	अपनी राय से	ये है

تَاْوِيْلُ	مَا	لَمْ	تَسْطِعْ	عَّلَيْهِ	صَبْرًا ﴿82﴾ ع ط	وَيَسْـَٔلُوْنَكَ
हक़ीक़त	उसकी जो	नहीं	तुम कर सके	जिस पर	सब्र	और वो सवाल करते हैं आपसे

10 ع 12 1

عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ط	قُلْ	سَاَتْلُوْا	عَلَيْكُمْ	مِّنْهُ	ذِكْرًا ﴿83﴾ ط	اِنَّا
जुलक़रनैन के बारे में	कह दीजिए	अनक़रीब मैं पढ़ूंगा	तुम पर	उसका	कुछ हाल	बेशक हम

مَكَّنَّا	لَهٗ	فِى الْاَرْضِ	وَاٰتَيْنٰهُ	مِنْ كُلِّ شَىْءٍ	سَبَبًا ﴿84﴾ لا
इक़्तिदार दिया हमने	उसे	ज़मीन में	और दिए हमने उसे	हर चीज़ से	असबाब

فَاَتْبَعَ	سَبَبًا ﴿85﴾	حَتّٰٓى	اِذَا	بَلَغَ	مَغْرِبَ	الشَّمْسِ	وَجَدَهَا
तो उसने पीछे लगाया	असबाब को	यहां तक कि	जब	वो पहुंच गया	गुरूब होने की जगह	सूरज के	उसने पाया उसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قُلْنَا	قَوْمًا ۬ۛ	عِنْدَهَا	وَّوَجَدَ	حَمِئَةٍ	فِيْ عَيْنٍ	تَغْرُبُ
कहा हमने	एक क़ौम को	पास उसके	और उसने पाया	स्याह कीचड़ वाले	एक चश्मे में	वो गुरूब हो रहा है

فِيْهِمْ	تَتَّخِذَ	اَنْ	وَ اِمَّآ	تُعَذِّبَ	اَنْ	اِمَّآ	يٰذَا الْقَرْنَيْنِ
इनके मामले में	तू इख़्तियार करे	ये कि	और ख़्वाह	तू सज़ा दे	ये कि	ख़्वाह	ऐ ज़ुलक़रनैन

ثُمَّ	نُعَذِّبُهٗ	فَسَوْفَ	ظَلَمَ	مَنْ	اَمَّا	قَالَ	حُسْنًا (86)
फिर	हम सज़ा देंगे उसे	तो अनक़रीब	ज़ुल्म किया	जिसने	रहा वो	उसने कहा	भलाई

مَنْ	وَ اَمَّا	نُّكْرًا (87)	عَذَابًا	فَيُعَذِّبُهٗ	اِلٰى رَبِّهٖ	يُرَدُّ
वो जो	और रहा	सख़्त	अज़ाब	तो वो अज़ाब देगा उसे	तरफ़ अपने रब के	वो लौटाया जाएगा

لَهٗ	وَسَنَقُوْلُ	الْحُسْنٰى ج	جَزَآءَ ۨ	فَلَهٗ	صَالِحًا	وَعَمِلَ	اٰمَنَ
उसे	और अनक़रीब हम कहेंगे	अच्छी	जज़ा है	तो उसके लिए	नेक	और उसने अमल किए	ईमान लाया

بَلَغَ	اِذَا	حَتّٰٓى	سَبَبًا (89)	اَتْبَعَ	ثُمَّ	يُسْرًا (88) ط	مِنْ اَمْرِنَا
वो पहुंच गया	जब	यहां तक कि	असबाब को	उसने पीछे लगाया	फिर	आसान	अपने काम में से

نَجْعَلْ	لَّمْ	عَلٰى قَوْمٍ	تَطْلُعُ	وَجَدَهَا	الشَّمْسِ	مَطْلِعَ
बनाया हमने	नहीं	उन लोगों पर	कि वो तुलूअ हो रहा है	उसने पाया उसे	सूरज के	तुलूअ होने की जगह

بِمَا	اَحَطْنَا	وَقَدْ	كَذٰلِكَ ط	سِتْرًا (90) لا	مِّنْ دُوْنِهَا	لَّهُمْ
उसको जो	घेर रखा था हमने	और तहक़ीक़	इसी तरह	कोई पर्दा/ओट	इस (सूरज) के आगे	उनके लिए

بَلَغَ	اِذَا	حَتّٰٓى	سَبَبًا (92)	اَتْبَعَ	ثُمَّ	خُبْرًا (91)	لَدَيْهِ
वो पहुंचा	जब	यहां तक कि	असबाब को	उसने पीछे लगाया	फिर	ख़बर में से	उसके पास था

يَفْقَهُوْنَ	لَّا يَكَادُوْنَ	قَوْمًا لا	مِنْ دُوْنِهِمَا	وَجَدَ	بَيْنَ السَّدَّيْنِ
कि वो समझते	ना वो क़रीब थे	ऐसे लोगों को	उन दोनों से उस तरफ़	उसने पाया	दर्मियान दो पहाड़ों के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُفۡسِدُوۡنَ	وَ مَاۡجُوۡجَ	يَاۡجُوۡجَ	اِنَّ	يٰذَاالۡقَرۡنَيۡنِ	قَالُوۡا	قَوۡلًا ﴿93﴾
फ़साद करने वाले हैं	और माजूज	याजूज	बेशक	ऐ ज़ुलक़रनैन	उन्होंने कहा	बात को

تَجۡعَلَ	اَنۡ	عَلٰٓى	خَرۡجًا	لَكَ	نَجۡعَلُ	فَهَلۡ	فِى الۡاَرۡضِ
तू बना दे	कि	इस पर	कुछ ख़राज	तेरे लिए	हम (जमा) कर दें	तो क्या	ज़मीन में

رَبِّىۡ	فِيۡهِ	مَكَّنِّىۡ	مَا	قَالَ	سَدًّا ﴿94﴾	وَ بَيۡنَهُمۡ	بَيۡنَنَا
मेरे रब ने	इसमें	क़ुदरत दी है मुझे	जो	उसने कहा	एक बंद/दीवार	और दर्मियान उनके	दर्मियान हमारे

رَدۡمًا ﴿95﴾ لا	وَ بَيۡنَهُمۡ	بَيۡنَكُمۡ	اَجۡعَلۡ	بِقُوَّةٍ	فَاَعِيۡنُوۡنِىۡ	خَيۡرٌ
एक मज़बूत बंद	और दर्मियान उनके	दर्मियान तुम्हारे	मैं बनाऊं	साथ क़ुव्वत के	पस तुम सब मदद करो मेरी	बेहतर है

الصَّدَفَيۡنِ	بَيۡنَ	سَاوٰى	اِذَا	حَتّٰٓى	الۡحَدِيۡدِ ط	زُبَرَ	اٰتُوۡنِىۡ
दो पहाड़ों की ख़ला को	दर्मियान	उसने बराबर कर दिया	जब	यहां तक कि	लोहे के	तख़्ते	दो मुझे

اُفۡرِغۡ	اٰتُوۡنِىۡۤ	قَالَ	نَارًا لا	جَعَلَهٗ	اِذَا	حَتّٰٓى	انۡفُخُوۡا ط	قَالَ
मैं उंडेलूं	दो मुझे	कहा	आग	उसने कर दिया उसे	जब	यहां तक कि	फूंको	कहा

اسۡتَطَاعُوۡا	وَمَا	يَّظۡهَرُوۡهُ	اَنۡ	اسۡطَاعُوۡۤا	فَمَا	قِطۡرًا ﴿96﴾ ط	عَلَيۡهِ
वो ताक़त रखते थे	और ना	वो चढ़ सकें उस पर	कि	वो ताक़त रखते थे	तो ना	पिघला हुआ तांबा	इस पर

جَآءَ	فَاِذَا	مِّنۡ رَّبِّىۡ ج	رَحۡمَةٌ	هٰذَا	قَالَ	نَقۡبًا ﴿97﴾	لَهٗ
आ जाएगा	फिर जब	मेरे रब की तरफ़ से	रहमत	ये है	कहा	सूराख़ करने की	उसमें

حَقًّا ﴿98﴾ ط	رَبِّىۡ	وَعۡدُ	وَ كَانَ	دَكَّآءَ ج	جَعَلَهٗ	رَبِّىۡ	وَعۡدُ
बरहक़	मेरे रब का	वादा	और है	रेज़ा-रेज़ा	वो कर देगा उसे	मेरे रब का	वादा

وَّنُفِخَ	فِىۡ بَعۡضٍ	يَّمُوۡجُ	يَوۡمَئِذٍ	بَعۡضَهُمۡ	وَ تَرَكۡنَا
और फूंक मारी जाएगी	बाज़ में	वो मौज की तरह घुस जाएंगे	उस दिन	उनके बाज़ को	और छोड़ देंगे हम

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

فِى الصُّوْرِ	فَجَمَعْنٰهُمْ	جَمْعًا ﴿99﴾ لا	وَّعَرَضْنَا	جَهَنَّمَ	يَوْمَئِذٍ
सूर में	तो जमा कर लेंगे हम उन्हें	जमा करना	और पेश करेंगे हम	जहन्नम को	उस दिन

لِّلْكٰفِرِيْنَ	عَرْضَا ﴿100﴾ لا	الَّذِيْنَ	كَانَتْ	اَعْيُنُهُمْ	فِىْ غِطَآءٍ
काफ़िरों के लिए	पेश करना	वो लोग जो	थीं	आंखें उनकी	पर्दे में

11 ع 19 2

عَنْ ذِكْرِىْ	وَكَانُوْا	لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ	سَمْعًا ﴿101﴾ ع	اَفَحَسِبَ	الَّذِيْنَ
मेरे ज़िक्र से	और थे वो	ना वो इस्तिताअत रखते	सुनने की	क्या फिर गुमान करते हैं	वो लोग जिन्होंने

كَفَرُوْٓا	اَنْ	يَّتَّخِذُوْا	عِبَادِىْ	مِنْ دُوْنِىْٓ	اَوْلِيَآءَ ط	اِنَّآ	اَعْتَدْنَا
कुफ़्र किया	कि	वो बना लेंगे	मेरे बंदों को	मेरे सिवा	हिमायती/दोस्त	बेशक हम	तैयार कर रखा है हमने

جَهَنَّمَ	لِلْكٰفِرِيْنَ	نُزُلًا ﴿102﴾	قُلْ	هَلْ	نُنَبِّئُكُمْ	بِالْاَخْسَرِيْنَ
जहन्नम को	काफ़िरों के लिए	बतौर मेहमानी के	कह दीजिए	क्या	हम बताऐं तुम्हें	सबसे ज़्यादा ख़सारे वाले

اَعْمَالًا ﴿103﴾ ط	اَلَّذِيْنَ	ضَلَّ	سَعْيُهُمْ	فِى الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَهُمْ
आमाल में	वो लोग जो	ज़ाया हो गई	कोशिश उनकी	ज़िंदगी में	दुनिया की	और वो

يَحْسَبُوْنَ	اَنَّهُمْ	يُحْسِنُوْنَ	صُنْعًا ﴿104﴾	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
वो समझते हैं	कि बेशक वो	वो अच्छे कर रहे हैं	काम	यही वो लोग हैं	जिन्होंने	कुफ़्र किया

بِاٰيٰتِ	رَبِّهِمْ	وَلِقَآئِهٖ	فَحَبِطَتْ	اَعْمَالُهُمْ	فَلَا	نُقِيْمُ
साथ आयात के	अपने रब की	और उसकी मुलाक़ात की	तो ज़ाया हो गए	आमाल उनके	तो नहीं	हम क़ायम करेंगे

لَهُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	وَزْنًا ﴿105﴾	ذٰلِكَ	جَزَآؤُهُمْ	جَهَنَّمُ	بِمَا
उनके लिए	दिन	क़यामत के	कोई वज़न	ये है	बदला उनका	जहन्नम	बवजह उसके जो

كَفَرُوْا	وَاتَّخَذُوْٓا	اٰيٰتِىْ	وَرُسُلِىْ	هُزُوًا ﴿106﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ
उन्होंने कुफ़्र किया	और उन्होंने बना लिया	मेरी आयात को	और मेरे रसूलों को	मज़ाक़	बेशक	वो लोग जो

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	كَانَتْ	لَهُمْ	جَنّٰتُ	الْفِرْدَوْسِ
ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	हैं	उनके लिए	बाग़ात	फ़िरदौस के

نُزُلًا ﴿107﴾	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا	لَا يَبْغُوْنَ	عَنْهَا	حِوَلًا ﴿108﴾	قُلْ	لَّوْ
बतौर मेहमानी	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	ना वो चाहेंगे	उनसे	फिरना	कह दीजिए	अगर

كَانَ	الْبَحْرُ	مِدَادًا	لِّكَلِمٰتِ	رَبِّيْ	لَنَفِدَ	الْبَحْرُ	قَبْلَ
हो जाए	समुन्दर(का पानी)	रोशनाई	कलिमात के लिए	मेरे रब के	अलबत्ता ख़त्म हो जाए	समुन्दर (का पानी)	इससे पहले

اَنْ	تَنْفَدَ	كَلِمٰتُ	رَبِّيْ	وَلَوْ	جِئْنَا	بِمِثْلِهٖ	مَدَدًا ﴿109﴾
कि	ख़त्म हों	कलिमात	मेरे रब के	और अगरचे	लाएं हम	मानिंद इसके	(मज़ीद) मदद

قُلْ	اِنَّمَآ	اَنَا	بَشَرٌ	مِّثْلُكُمْ	يُوْحٰٓى	اِلَيَّ	اَنَّمَآ
कह दीजिए	बेशक	मैं	एक इंसान हूं	तुम जैसा	वही की जाती है	मेरी तरफ़	बेशक

اِلٰهُكُمْ	اِلٰهٌ	وَّاحِدٌ ج	فَمَنْ	كَانَ	يَرْجُوْا	لِقَآءَ	رَبِّهٖ
इलाह तुम्हारा	इलाह है	एक ही	तो जो कोई	हो वो	वो उम्मीद रखता	मुलाक़ात की	अपने रब से

فَلْيَعْمَلْ	عَمَلًا	صَالِحًا	وَّلَا	يُشْرِكْ	بِعِبَادَةِ	رَبِّهٖٓ	اَحَدًا ﴿110﴾ ع	ع 12 9 3
पस चाहिए कि वो अमल करे	अमल	नेक	और ना	वो शरीक ठहराए	इबादत में	अपने रब की	किसी एक को	

اٰيَاتُهَا : 98 — 19 سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ 44 — رُكُوْعَاتُهَا : 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿1﴾ قف ج	ذِكْرُ	رَحْمَتِ	رَبِّكَ	عَبْدَهٗ	زَكَرِيَّا ﴿2﴾ صلے ج	اِذْ
كٓهٰيٰعٓصٓ	ज़िक्र है	रहमत का	आपके रब की	अपने बंदे	ज़करिया पर	जब

نَادٰى	رَبَّهٗ	نِدَآءً	خَفِيًّا ﴿3﴾	قَالَ	رَبِّ	اِنِّيْ	وَهَنَ
उसने पुकारा	अपने रब को	पुकारना	छुपी (आवाज़) से	कहा	ऐ मेरे रब	बेशक मैं	कमज़ोर हो गईं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْعَظْمُ	مِنِّيْ	وَاشْتَعَلَ	الرَّاْسُ	شَيْبًا	وَّلَمْ	اَكُنْ	بِدُعَآئِكَ
हड्डियां	मेरी	और भड़क उठा	सर	बुढ़ापे से	और नहीं	हुआ मैं	पुकार कर तुझे

رَبِّ	شَقِيًّا (4)	وَاِنِّيْ	خِفْتُ	الْمَوَالِيَ	مِنْ وَّرَآءِيْ	وَكَانَتِ
ऐ मेरे रब	कभी नामुराद	और बेशक मैं	मैं डरता हूं	वारिसों से	पीछे अपने	और है

امْرَاَتِيْ	عَاقِرًا	فَهَبْ	لِيْ	مِنْ لَّدُنْكَ	وَلِيًّا (5) لا	يَّرِثُنِيْ	وَيَرِثُ
बीवी मेरी	बांझ	पस अता कर	मुझे	अपने पास से	वारिस	जो वारिस हो मेरा	और वारिस हो

مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ق	وَاجْعَلْهُ	رَبِّ	رَضِيًّا (6)	يٰزَكَرِيَّآ	اِنَّا
आले याक़ूब का	और बना दे उसे	ऐ मेरे रब	पसंदीदा	ऐ ज़करिया	बेशक हम

نُبَشِّرُكَ	بِغُلٰمِ ِۨ	اسْمُهٗ	يَحْيٰى لا	لَمْ	نَجْعَلْ	لَّهٗ	مِنْ قَبْلُ
हम खुशख़बरी देते हैं तुझे	एक लड़के की	नाम जिसका	यहया (होगा)	नहीं	हमने बनाया	इसका	इससे पहले

سَمِيًّا (7)	قَالَ	رَبِّ	اَنّٰى	يَكُوْنُ	لِيْ	غُلٰمٌ	وَّكَانَتِ
कोई हमनाम	कहा	ऐ मेरे रब	कैसे	होगा	मेरे लिए	लड़का	जबकि है

امْرَاَتِيْ	عَاقِرًا	وَّقَدْ	بَلَغْتُ	مِنَ الْكِبَرِ	عِتِيًّا (8)	قَالَ	كَذٰلِكَ ج
बीवी मेरी	बांझ	और तहक़ीक़	पहुंचा हुआ हूं मैं	बुढ़ापे के	इंतिहाई दरजे को	उसने कहा	इसी तरह

قَالَ	رَبُّكَ	هُوَ	عَلَيَّ	هَيِّنٌ	وَّقَدْ	خَلَقْتُكَ	مِنْ قَبْلُ
फ़रमाया है	तेरे रब ने	वो	मुझ पर	बहुत आसान है	और तहक़ीक़	पैदा किया मैंने तुझे	इससे पहले

وَلَمْ	تَكُ	شَيْـًٔا (9)	قَالَ	رَبِّ	اجْعَلْ	لِّيْٓ	اٰيَةً ط	قَالَ
और ना	था तू	कुछ भी	कहा	ऐ मेरे रब	बना	मेरे लिए	कोई निशानी	कहा

اٰيَتُكَ	اَلَّا	تُكَلِّمَ	النَّاسَ	ثَلٰثَ	لَيَالٍ	سَوِيًّا (10)	فَخَرَجَ
निशानी तेरी	ये कि ना	तू कलाम करेगा	लोगों से	तीन	रातें	तंदरुस्ती (के बावजूद)	पस वो निकला

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلٰى قَوْمِهٖ	مِنَ الْمِحْرَابِ	فَاَوْحٰٓى	اِلَيْهِمْ	اَنْ	سَبِّحُوْا	بُكْرَةً
अपनी क़ौम पर	मेहराब से	तो उसने इशारा किया	तरफ़ उनके	कि	तस्बीह करो	सुबह

وَّعَشِيًّا (11)	يٰيَحْيٰى	خُذِ	الْكِتٰبَ	بِقُوَّةٍ ؕ	وَاٰتَيْنٰهُ	الْحُكْمَ
और शाम	ऐ यहया	पकड़ो	किताब को	क़ुव्वत से	और दी हमने उसे	हिक्मत/दानाई

صَبِيًّا (12) ۙ	وَّحَنَانًا	مِّنْ لَّدُنَّا	وَزَكٰوةً ؕ	وَكَانَ	تَقِيًّا (13) ۙ	وَّبَرًّۢا
बचपन ही से	और नर्म दिली	अपने पास से	और पाकीज़गी	और था वो	परहेज़गार	और नेकोकार

بِوَالِدَيْهِ	وَلَمْ	يَكُنْ	جَبَّارًا	عَصِيًّا (14)	وَسَلٰمٌ	عَلَيْهِ	يَوْمَ
साथ अपने वालिदैन के	और ना	था वो	सरकश	नाफ़रमान	और सलाम है	उस पर	जिस दिन

وُلِدَ	وَيَوْمَ	يَمُوْتُ	وَيَوْمَ	يُبْعَثُ	حَيًّا (15) ع	وَاذْكُرْ
वो पैदा किया गया	और जिस दिन	वो फ़ौत होगा	और जिस दिन	वो उठाया जाएगा	ज़िंदा करके	और ज़िक्र करो

ع 1 15 4

فِي الْكِتٰبِ	مَرْيَمَ ۘ	اِذِ	انْتَبَذَتْ	مِنْ اَهْلِهَا	مَكَانًا	شَرْقِيًّا (16) ۙ
किताब में	मरयम का	जब	वो अलग हो गई	अपने घरवालों से	एक जगह पर	मशरिक़ी जानिब

فَاتَّخَذَتْ	مِنْ دُوْنِهِمْ	حِجَابًا ۫ قف	فَاَرْسَلْنَآ	اِلَيْهَا	رُوْحَنَا
फिर उसने बना लिया	उनकी तरफ़ से	एक पर्दा	तो भेजा हमने	तरफ़ उसके	अपनी रूह (फ़रिश्ता) को

فَتَمَثَّلَ	لَهَا	بَشَرًا	سَوِيًّا (17)	قَالَتْ	اِنِّيْٓ	اَعُوْذُ
तो उसने शक्ल इख़्तियार की	उसके लिए	एक इंसान की	कामिल	वो कहने लगी	बेशक मैं	मैं पनाह लेती हूं

بِالرَّحْمٰنِ	مِنْكَ	اِنْ	كُنْتَ	تَقِيًّا (18)	قَالَ	اِنَّمَآ	اَنَا
रहमान की	तुझसे	अगर	है तू	मुत्तक़ी/डरने वाला	उसने कहा	बेशक	मैं

رَسُوْلُ	رَبِّكِ ۖ ق	لِاَهَبَ	لَكِ	غُلٰمًا	زَكِيًّا (19)	قَالَتْ	اَنّٰى
भेजा हुआ हूं	तेरे रब का	कि मैं अता करूं	तुझे	एक लड़का	पाकीज़ा	वो कहने लगी	कैसे

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَكُوْنُ	لِيْ	غُلٰمٌ	وَّلَمْ	يَمْسَسْنِيْ	بَشَرٌ	وَّلَمْ	اَكُ
होगा	मेरे लिए	कोई लड़का	हालांकि नहीं	छुआ मुझे	किसी इंसान ने	और नहीं	हूं मैं

بَغِيًّا (20)	قَالَ	كَذٰلِكِ ج	قَالَ	رَبُّكِ	هُوَ	عَلَيَّ	هَيِّنٌ ج
बदकार	कहा	इसी तरह (होगा)	कहा	तेरे रब ने	वो	मुझ पर	बहुत आसान है

وَلِنَجْعَلَهٗٓ	اٰيَةً	لِّلنَّاسِ	وَرَحْمَةً	مِّنَّا ج	وَكَانَ	اَمْرًا
और ताकि हम बना दें उसे	एक निशानी	लोगों के लिए	और रहमत	अपनी तरफ़ से	और है	एक काम

مَّقْضِيًّا (21)	فَحَمَلَتْهُ	فَانْتَبَذَتْ	بِهٖ	مَكَانًا	قَصِيًّا (22)	فَاَجَآءَهَا
तयशुदा	तो हमल ठहर गया उसे उसका	फिर वो अलग हो गई	साथ उसके	एक जगह पर	दूर की	तो ले आया उसे

الْمَخَاضُ	اِلٰى	جِذْعِ	النَّخْلَةِ ج	قَالَتْ	يٰلَيْتَنِيْ	مِتُّ	قَبْلَ
दर्दे ज़ह	तरफ़	तने के	खजूर के	वो कहने लगी	ऐ काश कि मैं	मर जाती मैं	पहले

هٰذَا	وَكُنْتُ	نَسْيًا مَّنْسِيًّا (23)	فَنَادٰىهَا	مِنْ تَحْتِهَآ	اَلَّا
इससे	और होती मैं	भूली-बिसरी	तो पुकारा उसे (फ़रिश्ते ने)	उसके नीचे से	कि ना

تَحْزَنِيْ	قَدْ	جَعَلَ	رَبُّكِ	تَحْتَكِ	سَرِيًّا (24)	وَهُزِّيْٓ	اِلَيْكِ
तू ग़मगीन हो	तहक़ीक़	बना दिया	तेरे रब ने	तेरे नीचे	एक चश्मा	और हिला ले	तरफ़ अपने

بِجِذْعِ	النَّخْلَةِ	تُسٰقِطْ	عَلَيْكِ	رُطَبًا	جَنِيًّا (25)	فَكُلِيْ	وَاشْرَبِيْ
तने को	खजूर के	वो गिराएगा	तुझ पर	पकी हुई खजूर	तरो-ताज़ा	फिर खा	और पी

وَقَرِّيْ	عَيْنًا ج	فَاِمَّا	تَرَيِنَّ	مِنَ الْبَشَرِ	اَحَدًا لا	فَقُوْلِيْٓ	اِنِّيْ
और ठंडी कर	आंखें	फिर अगर	तू देखे	इंसान में से	किसी एक को	तो कह दे	बेशक मैं

نَذَرْتُ	لِلرَّحْمٰنِ	صَوْمًا	فَلَنْ	اُكَلِّمَ	الْيَوْمَ	اِنْسِيًّا (26) ج
नज़र मानी है मैंने	रहमान के लिए	रोज़े की	तो हरगिज़ नहीं	मैं कलाम करूंगी	आज	किसी इंसान से

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

جِئْتِ	لَقَدْ	يٰمَرْيَمُ	قَالُوْا	تَحْمِلُهٗ ط	قَوْمَهَا	بِهٖ	فَاَتَتْ
लाई है तू	अलबत्ता तहक़ीक़	ऐ मरियम	वो कहने लगे	वो उठाए हुए थी उसे	अपनी क़ौम के पास	उसे	तो वो ले आई

امْرَاَ	اَبُوْكِ	كَانَ	مَا	هٰرُوْنَ	يٰۤاُخْتَ	فَرِيًّا (27)	شَيْـًٔا
आदमी	बाप तेरा	था	ना	हारून की	ऐ बहन	बहुत बुरी/अजीब	एक चीज़

قَالُوْا	اِلَيْهِ ط	فَاَشَارَتْ	بَغِيًّا (28) ج	اُمُّكِ	كَانَتْ	وَّمَا	سَوْءٍ
उन्होंने कहा	तरफ़ उसके	तो उसने इशारा कर दिया	बदकार	मां तेरी	थी	और ना	बुरा

اِنِّيْ	قَالَ	صَبِيًّا (29)	فِي الْمَهْدِ	كَانَ	مَنْ	نُكَلِّمُ	كَيْفَ
बेशक मैं	वो बोला	एक बच्चा	पंघोड़े में	है वो	इससे जो	हम कलाम करें	किस तरह

وَّجَعَلَنِيْ	نَبِيًّا (30) لا	وَجَعَلَنِيْ	الْكِتٰبَ	اٰتٰنِيَ	اللّٰهِ قف	عَبْدُ
और उसने बनाया मुझे	नबी	और उसने बनाया मुझे	किताब	उसने दी मुझे	अल्लाह का	बंदा हूं

مَادُمْتُ	وَالزَّكٰوةِ	بِالصَّلٰوةِ	وَاَوْصٰنِيْ	كُنْتُ ص	اَيْنَ مَا	مُبٰرَكًا
जब तक मैं रहूं	और ज़कात की	नमाज़ की	और उसने ताकीद की मुझे	मैं हूं	जहां कहीं	मुबारक

شَقِيًّا (32)	جَبَّارًا	يَجْعَلْنِيْ	وَلَمْ	بِوَالِدَتِيْ ز	وَّبَرًّا	حَيًّا (31) صلے
बदबख़्त	सरकश	उसने बनाया मुझे	और नहीं	अपनी वालिदा से	और नेक सुलूक करने वाला	ज़िंदा

اُبْعَثُ	وَيَوْمَ	اَمُوْتُ	وَيَوْمَ	وُلِدْتُّ	يَوْمَ	عَلَيَّ	وَالسَّلٰمُ
मैं उठाया जाऊंगा	और जिस दिन	मैं मरुंगा	और जिस दिन	पैदा किया गया मैं	जिस दिन	मुझ पर	और सलामती है

فِيْهِ	الَّذِيْ	الْحَقِّ	قَوْلَ	عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ج	ذٰلِكَ	حَيًّا (33)
इसमें	वो जो	हक़ की	बात	ईसा इबने मरियम	ये हैं	ज़िंदा करके

سُبْحٰنَهٗ ط	مِنْ وَّلَدٍ لا	يَّتَّخِذَ	اَنْ	لِلّٰهِ	كَانَ	مَا	يَمْتَرُوْنَ (34)
पाक है वो	कोई औलाद	वो बनाए	कि	अल्लाह के	है (लायक़)	नहीं	वो शक करते हैं

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَيَكُوْنُ ؕ (35)	كُنْ	لَهٗ	يَقُوْلُ	فَاِنَّمَا	اَمْرًا	قَضٰٓى	اِذَا
तो वो हो जाता है	हो जा	उसे	वो कहता है	तो बेशक	किसी काम का	वो फ़ैसला करता है	जब

صِرَاطٌ	هٰذَا	فَاعْبُدُوْهُ ؕ	وَرَبُّكُمْ	رَبِّيْ	اللّٰهَ	وَاِنَّ
रास्ता	ये है	पस इबादत करो उसकी	और रब है तुम्हारा	रब है मेरा	अल्लाह	और बेशक

لِلَّذِيْنَ	فَوَيْلٌ	مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ	الْاَحْزَابُ	فَاخْتَلَفَ	مُّسْتَقِيْمٌ (36)
उनके लिए जिन्होंने	तो हलाकत है	आपस में	गिरोहों ने	तो इख़्तिलाफ़ किया	सीधा

وَاَبْصِرْ ۙ	اَسْمِعْ بِهِمْ	يَوْمٍ عَظِيْمٍ (37)	مِنْ مَّشْهَدِ	كَفَرُوْا
और क्या ख़ूब देखने वाले	क्या ख़ूब सुनने वाले होंगे वो	बड़े दिन की	हाज़िरी से	कुफ़्र किया

مُّبِيْنٍ (38)	فِيْ ضَلٰلٍ	الْيَوْمَ	الظّٰلِمُوْنَ	لٰكِنِ	يَاْتُوْنَنَا	يَوْمَ
खुली	गुमराही में हैं	आज	ज़ालिम लोग	लेकिन	वो आएंगे हमारे पास	जिस दिन

وقف لازم

وَهُمْ	الْاَمْرُ ۘ	قُضِيَ	اِذْ	يَوْمَ الْحَسْرَةِ	وَاَنْذِرْهُمْ
और वो	इस मामले का	फ़ैसला किया जाएगा	जब	हसरत के दिन से	और डराइए उन्हें

الْاَرْضَ	نَرِثُ	نَحْنُ	اِنَّا	لَا يُؤْمِنُوْنَ (39)	وَّهُمْ	فِيْ غَفْلَةٍ
ज़मीन के	हम वारिस होंगे	हम ही	बेशक हम	नहीं वो ईमान लाते	और वो	(अब) ग़फ़लत में हैं

ع 2 25 5

فِي الْكِتٰبِ	وَاذْكُرْ	يُرْجَعُوْنَ (40) ع	وَاِلَيْنَا	عَلَيْهَا	وَمَنْ
किताब में	और ज़िक्र कीजिए	वो लौटाए जाएंगे	और तरफ़ हमारे ही	उस पर है	और जो

لِاَبِيْهِ	قَالَ	اِذْ	نَّبِيًّا (41)	صِدِّيْقًا	كَانَ	اِنَّهٗ	اِبْرٰهِيْمَ ۬ۚ
अपने बाप से	उसने कहा	जब	नबी	सच्चा	था वो	बेशक वो	इब्राहीम का

وَلَا	يُبْصِرُ	وَلَا	لَا يَسْمَعُ	مَا	تَعْبُدُ	لِمَ	يٰٓاَبَتِ
और ना	वो देखता है	और ना	ना वो सुनता है	उसकी जो	आप इबादत करते हैं	क्यों	ऐ मेरे अब्बा जान

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

جَآءَنِيْ	قَدْ	اِنِّيْ	يٰٓاَبَتِ	شَيْـًٔا ﴿42﴾	عَنْكَ	يُغْنِيْ
आया है मेरे पास	तहक़ीक़	बेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा जान	कुछ भी	आपके	वो काम आता है

صِرَاطًا	اَهْدِكَ	فَاتَّبِعْنِيْٓ	يَاْتِكَ	لَمْ	مَا	مِنَ الْعِلْمِ
(तरफ़) रास्ते	मैं रहनुमाई करुंगा आपकी	पस पैरवी कीजिए मेरी	आया आपके पास	नहीं	जो	इल्म में से

كَانَ	الشَّيْطٰنَ	اِنَّ	الشَّيْطٰنَ ۭ	لَا تَعْبُدِ	يٰٓاَبَتِ	سَوِيًّا ﴿43﴾
है वो	शैतान	बेशक	शैतान की	ना आप इबादत कीजिए	ऐ मेरे अब्बा जान	सीधे के

يَّمَسَّكَ	اَنْ	اَخَافُ	اِنِّيْٓ	يٰٓاَبَتِ	عَصِيًّا ﴿44﴾	لِلرَّحْمٰنِ
पहुंचेगा आपको	कि	मैं डरता हूं	बेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा जान	नाफ़रमान	रहमान का

اَرَاغِبٌ	قَالَ	وَلِيًّا ﴿45﴾	لِلشَّيْطٰنِ	فَتَكُوْنَ	مِّنَ الرَّحْمٰنِ	عَذَابٌ
क्या फिरने वाला है	उसने कहा	दोस्त	शैतान के	फिर आप हो जाऐंगे	रहमान की तरफ़ से	अज़ाब

لَاَرْجُمَنَّكَ	تَنْتَهِ	لَّمْ	لَىِٕنْ	يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۚ	عَنْ اٰلِهَتِيْ	اَنْتَ
अलबत्ता मैं ज़रूर संगसार कर दूंगा तुझे	तू बाज़ आया	ना	अलबत्ता अगर	ऐ इब्राहीम	मेरे इलाहों से	तू

لَكَ	سَاَسْتَغْفِرُ	عَلَيْكَ ۚ	سَلٰمٌ	قَالَ	مَلِيًّا ﴿46﴾	وَاهْجُرْنِيْ
आप के लिए	ज़रूर मैं बख़्शिश मांगूंगा	आप पर	सलाम हो	उसने कहा	लम्बी मुद्दत तक	और छोड़ दे मुझे

تَدْعُوْنَ	وَمَا	وَاَعْتَزِلُكُمْ	حَفِيًّا ﴿47﴾	بِيْ	كَانَ	اِنَّهٗ	رَبِّيْ ۭ
तुम पुकारते हो	और जिन्हें	और मैं छोड़ता हूं तुम्हें	बड़ा मेहरबान	मुझ पर	है वो	बेशक वो	अपने रब से

بِدُعَاۗءِ	اَكُوْنَ	اَلَّآ	عَسٰٓى	رَبِّيْ ښ	وَاَدْعُوْا	اللّٰهِ	مِنْ دُوْنِ
पुकार कर	मैं हूंगा	कि ना	उम्मीद है	अपने रब को	और मैं पुकारता हूं	अल्लाह के	सिवाए

مِنْ دُوْنِ	يَعْبُدُوْنَ	وَمَا	اعْتَزَلَهُمْ	فَلَمَّا	شَقِيًّا ﴿48﴾	رَبِّيْ
सिवाए	वो इबादत करते थे	और जिनकी	उसने छोड़ दिया उन्हें	तो जब	महरूम/बदनसीब	अपने रब को

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اللّٰهِ ۚ	وَهَبْنَا	لَهٗۤ	اِسْحٰقَ	وَيَعْقُوْبَ ؕ	وَكُلًّا	جَعَلْنَا	نَبِيًّا (49)
अल्लाह के	अता किए हमने	उसे	इसहाक़	और याक़ूब	और हर एक को	बनाया हमने	नबी

وَوَهَبْنَا	لَهُمْ	مِّنْ رَّحْمَتِنَا	وَجَعَلْنَا	لَهُمْ	لِسَانَ	صِدْقٍ
और अता किया हमने	उन्हें	अपनी रहमत से	और कर दी हमने	उनके लिए	ज़बान/नामवरी	सच्चाई की

ع 3 10 6

عَلِيًّا (50) ع	وَاذْكُرْ	فِي الْكِتٰبِ	مُوْسٰٓى ۫	اِنَّهٗ	كَانَ	مُخْلَصًا
बहुत बुलंद	और ज़िक्र कीजिए	किताब में	मूसा का	बेशक वो	था वो	ख़ालिस किया हुआ/चुना हुआ

وَّكَانَ	رَسُوْلًا	نَّبِيًّا (51)	وَنَادَيْنٰهُ	مِنْ جَانِبِ	الطُّوْرِ	الْاَيْمَنِ
और था वो	एक रसूल	नबी	और पुकारा हमने उसे	जानिब से	तूर की	दाऐं

وَقَرَّبْنٰهُ	نَجِيًّا (52)	وَوَهَبْنَا	لَهٗ	مِنْ رَّحْمَتِنَآ	اَخَاهُ	هٰرُوْنَ
और क़रीब कर लिया हमने उसे	सरगोशी के लिए	और अता किया हमने	उसे	अपनी रहमत से	उसका भाई	हारून

نَبِيًّا (53)	وَاذْكُرْ	فِي الْكِتٰبِ	اِسْمٰعِيْلَ ۫	اِنَّهٗ	كَانَ	صَادِقَ
नबी बना कर	और ज़िक्र कीजिए	किताब में	इस्माईल का	बेशक वो	था वो	सच्चा

الْوَعْدِ	وَكَانَ	رَسُوْلًا	نَّبِيًّا (54) ج	وَكَانَ	يَاْمُرُ	اَهْلَهٗ
वादे का	और था वो	एक रसूल	नबी	और था वो	वो हुक्म देता	अपने घरवालों को

بِالصَّلٰوةِ	وَالزَّكٰوةِ ۣ	وَكَانَ	عِنْدَ رَبِّهٖ	مَرْضِيًّا (55)	وَاذْكُرْ
नमाज़ का	और ज़कात का	और था वो	अपने रब के यहां	पसंदीदा	और ज़िक्र कीजिए

فِي الْكِتٰبِ	اِدْرِيْسَ ۫	اِنَّهٗ	كَانَ	صِدِّيْقًا	نَّبِيًّا (56) ۙ	وَّرَفَعْنٰهُ
किताब में	इदरीस का	बेशक वो	था वो	सिद्दीक़/निहायत सच्चा	नबी	और बुलंद किया हमने उसे

مَكَانًا	عَلِيًّا (57)	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	اَنْعَمَ	اللّٰهُ	عَلَيْهِمْ
मक़ाम	बुलंद पर	यही लोग हैं	जो	इनाम किया	अल्लाह ने	उन पर

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

مِنَ النَّبِيّٖنَ	مِنْ ذُرِّيَّةِ	اٰدَمَ ق	وَمِمَّنْ	حَمَلْنَا	مَعَ نُوْحٍ ز
नबियों में से	औलाद में से	आदम की	और उनमें से जिन्हें	सवार किया हमने	साथ नूह के

وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ	اِبْرٰهِيْمَ	وَاِسْرَآءِيْلَ ز	وَمِمَّنْ	هَدَيْنَا
और औलाद में से	इब्राहीम	और इस्राईल (याक़ूब) की	और उनमें से जिन्हें	हिदायत दी हमने

وَاجْتَبَيْنَا ط	اِذَا	تُتْلٰى	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتُ	الرَّحْمٰنِ	خَرُّوْا
और चुन लिया हमने	जब	पढ़ी जाती थीं	उन पर	आयात	रहमान की	वो गिर पड़ते थे

السجدة 5

سُجَّدًا	وَّبُكِيًّا (58) السجدة	فَخَلَفَ	مِنْ بَعْدِهِمْ	خَلْفٌ	اَضَاعُوا
सज्दा करते हुए	और रोते हुए	तो पीछे आए	बाद उनके	बुरे जानशीन	जिन्होंने ज़ाया कर दी

الصَّلٰوةَ	وَاتَّبَعُوا	الشَّهَوٰتِ	فَسَوْفَ	يَلْقَوْنَ	غَيًّا (59) لا	اِلَّا
नमाज़	और उन्होंने पैरवी की	ख़्वाहिशात की	तो अनक़रीब	वो जा मिलेंगे	गुमराही/हलाकत को	सिवाय

مَنْ	تَابَ	وَاٰمَنَ	وَعَمِلَ	صَالِحًا	فَاُولٰٓئِكَ	يَدْخُلُوْنَ
उसके जो	तौबा करे	और वो ईमान ले आए	और वो अमल करे	नेक	तो यही लोग हैं	वो दाख़िल होंगे

الْجَنَّةَ	وَلَا	يُظْلَمُوْنَ	شَيْئًا (60) لا	جَنّٰتِ	عَدْنِ	الَّتِيْ	وَعَدَ
जन्नत में	और ना	वो ज़ुल्म किए जाऐंगे	कुछ भी	बाग़ात	हमेशगी के	वो जिनका	वादा किया

الرَّحْمٰنُ	عِبَادَهٗ	بِالْغَيْبِ ط	اِنَّهٗ	كَانَ	وَعْدُهٗ	مَاْتِيًّا (61)
रहमान ने	अपने बन्दों से	ग़ायबाना	बेशक वो	है	वादा उसका	आया हुआ

لَا يَسْمَعُوْنَ	فِيْهَا	لَغْوًا	اِلَّا	سَلٰمًا ط	وَلَهُمْ	رِزْقُهُمْ
ना वो सुनेंगे	उसमें	कोई लग़्व	सिवाय	सलाम के	और उनके लिए	उनका रिज़्क़ (होगा)

فِيْهَا	بُكْرَةً	وَّعَشِيًّا (62)	تِلْكَ	الْجَنَّةُ	الَّتِيْ	نُوْرِثُ
उसमें	सुबह	और शाम	ये है	जन्नत	जिसका	हम वारिस बनाऐंगे

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاَمْرِ	اِلَّا	نَتَنَزَّلُ	وَمَا	تَقِيًّا ﴿63﴾	كَانَ	مَنْ	مِنْ عِبَادِنَا
हुक्म से	मगर	हम उतारा करते	और नहीं	मुत्तक़ी/डरने वाला	होगा	उसे जो	अपने बंदों में से

وَمَا	خَلْفَنَا	وَمَا	بَيْنَ اَيْدِيْنَا	مَا	لَهٗ	رَبِّكَ ج
और जो	हमारे पीछे है	और जो	हमारे आगे है	जो	उसी के लिए है	आपके रब के

السَّمٰوٰتِ	رَبُّ	نَسِيًّا ﴿64﴾ ج	رَبُّكَ	كَانَ	وَمَا	بَيْنَ ذٰلِكَ ج
आसमानों	रब है	भूलने वाला	रब आपका	है	और नहीं	दर्मियान है उसके

لِعِبَادَتِهٖ ط	وَاصْطَبِرْ	فَاعْبُدْهُ	بَيْنَهُمَا	وَمَا	وَالْاَرْضِ
उसकी इबादत पर	और जमे रहो/क़ायम रहो	पस इबादत करो उसकी	दर्मियान है उन दोनों के	और उसका जो	और ज़मीन का

ع 4 15 7

مِتُّ	ءَاِذَا مَا	الْاِنْسَانُ	وَيَقُوْلُ	سَمِيًّا ﴿65﴾ ع	لَهٗ	تَعْلَمُ	هَلْ
मर जाऊंगा मैं	क्या जब	इंसान	और कहता है	कोई हमनाम	उसका	तुम जानते हो	क्या

خَلَقْنٰهُ	اَنَّا	الْاِنْسَانُ	يَذْكُرُ	اَوَلَا	حَيًّا ﴿66﴾	اُخْرَجُ	لَسَوْفَ
पैदा किया हमने उसे	कि बेशक हम	इंसान	याद करता	क्या भला नहीं	ज़िंदा करके	मैं निकाला जाऊंगा	अलबत्ता अनक़रीब

لَنَحْشُرَنَّهُمْ	فَوَرَبِّكَ	شَيْـًٔا ﴿67﴾	يَكُ	وَلَمْ	مِنْ قَبْلُ
अलबत्ता हम ज़रूर जमा करेंगे उन्हें	पस क़सम है आपके रब की	कोई चीज़	था वो	और ना	इससे क़ब्ल

جِثِيًّا ﴿68﴾ ج	جَهَنَّمَ	حَوْلَ	لَنُحْضِرَنَّهُمْ	ثُمَّ	وَالشَّيٰطِيْنَ
घुटनों के बल गिरे हुए	जहन्नम के	इर्द-गिर्द	अलबत्ता हम ज़रूर हाज़िर करेंगे उन्हें	फिर	और शैतानों को

عَلَى الرَّحْمٰنِ	اَشَدُّ	اَيُّهُمْ	مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ	لَنَنْزِعَنَّ	ثُمَّ
रहमान के मुक़ाबले पर	ज़्यादा सख़्त था	जो भी उनमें से	हर गिरोह में से	अलबत्ता हम ज़रूर खींच लेंगे	फिर

بِهَا	اَوْلٰى	هُمْ	بِالَّذِيْنَ	اَعْلَمُ	لَنَحْنُ	ثُمَّ	عِتِيًّا ﴿69﴾ ج
उसमें	ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं	वो	उनको जो	ज़्यादा जानने वाले हैं	अलबत्ता हम	फिर	सरकशी में

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

صِلِيًّا (70)	وَإِنْ	مِّنْكُمْ	إِلَّا	وَارِدُهَا ج	كَانَ	عَلٰى رَبِّكَ
झोंके जाने के	और नहीं	तुम में से कोई	मगर	वारिद होने वाला है उस पर	है	आपके रब पर

حَتْمًا	مَّقْضِيًّا (71) ج	ثُمَّ	نُنَجِّي	الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	وَّنَذَرُ
हतमी/लाज़िम	तयशुदा फ़ैसला	फिर	हम निजात देंगे	उनको जिन्होंने	तक़्वा किया	और हम छोड़ देंगे

الظّٰلِمِيْنَ	فِيْهَا	جِثِيًّا (72)	وَإِذَا	تُتْلٰى	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتُنَا	بَيِّنٰتٍ
ज़ालिमों को	उस में	घुटनों के बल गिरा हुआ	और जब	पढ़ी जाती हैं	उन पर	आयात हमारी	वाज़ेह

قَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لِلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا لا	اَيُّ	الْفَرِيْقَيْنِ	خَيْرٌ
कहते हैं	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	उनसे जो	ईमान लाए	कौन-सा	दोनों फ़रीक़ों में से	बेहतर है

مَّقَامًا	وَّاَحْسَنُ	نَدِيًّا (73)	وَكَمْ	اَهْلَكْنَا	قَبْلَهُمْ	مِّنْ قَرْنٍ
मक़ाम में	और ख़ूबतर	मजलिस में	और कितनी ही	हलाक कर दीं हमने	इनसे पहले	उम्मतें

هُمْ	اَحْسَنُ	اَثَاثًا	وَّرِءْيًا (74)	قُلْ	مَنْ	كَانَ	فِي الضَّلٰلَةِ
वो	ज़्यादा अच्छे थे	साज़ो सामान में	और नमूद व नुमाइश में	कह दीजिए	जो कोई	है	गुमराही में

فَلْيَمْدُدْ	لَهُ	الرَّحْمٰنُ	مَدًّا ج ۵	حَتّٰٓى	إِذَا	رَاَوْا	مَا
पस ज़रूर ढील देता है	उसे	रहमान	ख़ूब ढील देना	यहां तक कि	जब	वो देख लेंगे	जो

يُوْعَدُوْنَ	إِمَّا	الْعَذَابَ	وَإِمَّا	السَّاعَةَ ط	فَسَيَعْلَمُوْنَ	مَنْ
वो वादा किए जाते हैं	ख़्वाह	अज़ाब हो	और ख़्वाह	क़यामत हो	तो अनक़रीब वो जान लेंगे	कौन है

هُوَ	شَرٌّ	مَّكَانًا	وَّاَضْعَفُ	جُنْدًا (75)	وَيَزِيْدُ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ
वो (जो)	बदतर है	मक़ाम में	और कमज़ोरतर	लश्कर के ऐतबार से	और ज़्यादा करता है	अल्लाह	उनको जिन्होंने

اهْتَدَوْا	هُدًى ط	وَالْبٰقِيٰتُ	الصّٰلِحٰتُ	خَيْرٌ	عِنْدَ	رَبِّكَ
हिदायत पाई	हिदायत में	और बाक़ी रहने वाली	नेकियां	बेहतर हैं	नज़दीक	आपके रब के

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاٰيٰتِنَا	كَفَرَ	الَّذِىْ	اَفَرَءَيْتَ	مَّرَدًّا (76)	وَّخَيْرٌ	ثَوَابًا
साथ हमारी आयात के	कुफ़्र किया	उसे जिसने	क्या फिर देखा आपने	अंजाम में	और बेहतर हैं	सवाब में

اَمِ	الْغَيْبَ	اَطَّلَعَ	وَّوَلَدًا (77) ط	مَالًا	لَاُوْتَيَنَّ	وَقَالَ
या	ग़ैब पर	क्या वो मुत्तला हो गया है	और औलाद	माल	अलबत्ता मैं ज़रूर दिया जाऊंगा	और कहा

يَقُوْلُ	مَا	سَنَكْتُبُ	كَلَّا ط	عَهْدًا (78) لا	عِنْدَ الرَّحْمٰنِ	اتَّخَذَ
वो कहता है	जो	अनक़रीब हम लिख लेंगे	हरगिज़ नहीं	कोई अहद	रहमान के यहां	उसने ले रखा है

مَا	وَّنَرِثُهٗ	مَدًّا (79) لا	مِنَ الْعَذَابِ	لَهٗ	وَنَمُدُّ
जो	और हम वारिस होंगे उसके	बढ़ाना	अज़ाब में से	उसके लिए	और हम बढ़ाते जाऐंगे

اٰلِهَةً	اللّٰهِ	مِنْ دُوْنِ	وَاتَّخَذُوْا	فَرْدًا (80)	وَيَاْتِيْنَا	يَقُوْلُ
कुछ इलाह	अल्लाह के	सिवाए	और उन्होंने बना लिए	अकेला	और वो आएगा हमारे पास	वो कहता है

بِعِبَادَتِهِمْ	سَيَكْفُرُوْنَ	كَلَّا ط	عِزًّا (81) لا	لَهُمْ	لِّيَكُوْنُوْا
उनकी इबादत का	अनक़रीब वो इंकार करेंगे	हरगिज़ नहीं	इज़्ज़त का सबब	उनके लिए	ताकि वो हों

ع 5 17 8

اَرْسَلْنَا	اَنَّآ	تَرَ	اَلَمْ	ضِدًّا (82) ع	عَلَيْهِمْ	وَيَكُوْنُوْنَ
छोड़ रखा है हमने	बेशक हम	आपने देखा	क्या नहीं	मुख़ालिफ़	उनके	और वो हो जाऐंगे

عَلَيْهِمْ ط	تَعْجَلْ	فَلَا	اَزًّا (83) لا	تَؤُزُّهُمْ	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ	الشَّيٰطِيْنَ
उन पर	आप जल्दी कीजिए	तो ना	ख़ूब उकसाना	वो उकसाते हैं उन्हें	काफ़िरों पर	शैतानों को

الْمُتَّقِيْنَ	نَحْشُرُ	يَوْمَ	عَدًّا (84) ج	لَهُمْ	نَعُدُّ	اِنَّمَا
मुत्तक़ी लोगों को	हम इकट्ठा करेंगे	जिस दिन	ख़ूब गिनना	उनके लिए	हम गिन रहे हैं	बेशक

وقف لازم

وِرْدًا (86) م	اِلٰى جَهَنَّمَ	الْمُجْرِمِيْنَ	وَّنَسُوْقُ	وَفْدًا (85) لا	اِلَى الرَّحْمٰنِ
सख़्त प्यासे	तरफ़ जहन्नम के	मुजरिमों को	और हम हांक ले जाऐंगे	मेहमान बना कर	तरफ़ रहमान के

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف لازم

عَهْدًا (87)	عِنْدَ الرَّحْمٰنِ	اتَّخَذَ	مَنِ	اِلَّا	الشَّفَاعَةَ	لَا يَمْلِكُوْنَ
कोई अहद	रहमान से	ले लिया	जिसने	मगर	शफ़ाअत के	ना वो मालिक होंगे

اِدًّا (89) ۙ	شَيْـًٔا	جِئْتُمْ	لَقَدْ	وَلَدًا (88) ؕ	الرَّحْمٰنُ	اتَّخَذَ	وَقَالُوا
बहुत भारी	एक चीज़	लाऐ हो तुम	अलबत्ता तहक़ीक़	कोई औलाद	रहमान ने	बना ली है	और उन्होंने कहा

وَتَخِرُّ	الْاَرْضُ	وَتَنْشَقُّ	مِنْهُ	يَتَفَطَّرْنَ	السَّمٰوٰتُ	تَكَادُ
और गिर पड़ें	ज़मीन	और शक़ हो जाए	उससे	कि वो फट पड़ें	आसमान	क़रीब है

يَنْۢبَغِيْ	وَمَا	وَلَدًا (91) ۚ	لِلرَّحْمٰنِ	دَعَوْا	اَنْ	هَدًّا (90) ۙ	الْجِبَالُ
लायक़	और नहीं	औलाद का	रहमान के लिए	उन्होंने दावा किया	कि	रेज़ा-रेज़ा होकर	पहाड़

فِي السَّمٰوٰتِ	مَنْ	اِنْ كُلُّ	وَلَدًا (92) ؕ	يَّتَّخِذَ	اَنْ	لِلرَّحْمٰنِ
आसमानों में	जो	नहीं है कोई भी	औलाद	वो बना ले	कि	रहमान के

اَحْصٰىهُمْ	لَقَدْ	عَبْدًا (93) ؕ	الرَّحْمٰنِ	اٰتِي	اِلَّاۤ	وَالْاَرْضِ
उसने घेर रखा है उन्हें	अलबत्ता तहक़ीक़	बंदा बन कर	रहमान के (पास)	आने वाला है	मगर	और ज़मीन में है

فَرْدًا (95)	الْقِيٰمَةِ	يَوْمَ	اٰتِيْهِ	وَكُلُّهُمْ	عَدًّا (94) ؕ	وَعَدَّهُمْ
अकेला	क़यामत के	दिन	आने वाला है उसके पास	और हर एक उनमें से	गिनना	और गिन रखा है उन्हें

الرَّحْمٰنُ	لَهُمُ	سَيَجْعَلُ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	اِنَّ
रहमान	उनके लिए	अनक़रीब पैदा कर देगा	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	वो लोग जो	बेशक

الْمُتَّقِيْنَ	بِهِ	لِتُبَشِّرَ	بِلِسَانِكَ	يَسَّرْنٰهُ	فَاِنَّمَا	وُدًّا (96)
मुत्तक़ी लोगों को	साथ इसके	ताकि आप ख़ुशख़बरी दें	आपकी ज़बान में	आसान कर दिया हमने उसे	पस बेशक	मोहब्बत

مِّنْ قَرْنٍ ؕ	قَبْلَهُمْ	اَهْلَكْنَا	وَكَمْ	لُّدًّا (97)	قَوْمًا	بِهٖ	وَتُنْذِرَ
उम्मतें/बस्तियां	इनसे पहले	हलाक कीं हमने	और कितनी ही	जो झगड़ालू है	ऐसी क़ौम को	साथ इसके	और आप डराऐं

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 16 6 9

رِكۡزًا ۹۸ ع	لَهُمۡ	تَسۡمَعُ	اَوۡ	مِّنۡ اَحَدٍ	مِنۡهُمۡ	تُحِسُّ	هَلۡ
कोई आहट/भनक	उनकी	आप सुनते हैं	या	किसी एक को भी	उनमें से	आप महसूस करते हैं	क्या

رُكُوۡعَاتُهَا: 8 | 45 سُوۡرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ 20 | اٰيَاتُهَا: 135

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

تَذۡكِرَةً	اِلَّا	لِتَشۡقٰٓى ۲ لا	الۡقُرۡاٰنَ	عَلَيۡكَ	اَنۡزَلۡنَا	مَآ	طٰهٰ ۱ ج
एक नसीहत	मगर	कि आप मुसीबत में पड़ जाएं	क़ुरआन	आप पर	नाज़िल किया हमने	नहीं	طٰهٰ

وَالسَّمٰوٰتِ	الۡاَرۡضَ	خَلَقَ	مِّمَّنۡ	تَنۡزِيۡلًا	يَّخۡشٰى ۳ لا	لِّمَنۡ
और आसमानों को	ज़मीन	पैदा किया	उसकी तरफ़ से जिसने	नाज़िल करदा है	डरता हो	उसके लिए जो

فِى السَّمٰوٰتِ	مَا	لَهٗ	اسۡتَوٰى ۵	عَلَى الۡعَرۡشِ	اَلرَّحۡمٰنُ	الۡعُلٰى ۴ ط
आसमानों में है	जो	उसी के लिए है	बुलंद हुआ	जो अर्श पर	वो रहमान है	जो बुलंद हैं

وَاِنۡ	الثَّرٰى ۶	تَحۡتَ	وَمَا	بَيۡنَهُمَا	وَمَا	فِى الۡاَرۡضِ	وَمَا
और अगर	गीली मिट्टी के	नीचे है	और जो	दर्मियान है इन दोनों के	और जो	ज़मीन में है	और जो

لَآ	اَللّٰهُ	وَاَخۡفٰى ۷	السِّرَّ	يَعۡلَمُ	فَاِنَّهٗ	بِالۡقَوۡلِ	تَجۡهَرۡ
नहीं	अल्लाह	और ज़्यादा ख़ुफ़िया को	पोशीदा को	वो जानता है	तो बेशक वो	बात को	आप बुलंद आवाज़ से करें

اَتٰىكَ	وَهَلۡ	الۡحُسۡنٰى ۸	الۡاَسۡمَآءُ	لَهُ	هُوَ ط	اِلَّا	اِلٰهَ
आई आपके पास	और क्या	बहुत अच्छे	नाम	उसी के लिए हैं	वो ही	मगर	कोई इलाह (बरहक़)

وقف لازم

اِنِّىۡۤ	امۡكُثُوۡۤا	لِاَهۡلِهِ	فَقَالَ	نَارًا	رَاٰ	اِذۡ	مُوۡسٰى ۹	حَدِيۡثُ
बेशक मैं	ठहरो	अपने घरवालों से	पस कहा	आग	उसने देखी	जब	मूसा की	ख़बर

اَجِدُ	اَوۡ	بِقَبَسٍ	مِّنۡهَا	اٰتِيۡكُمۡ	لَّعَلِّىۡۤ	نَارًا	اٰنَسۡتُ
मैं पाऊं	या	कोई शोला/अंगारा	उसमें से	मैं ले आऊं तुम्हारे पास	शायद कि मैं	एक आग	देखी है मैंने

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَى النَّارِ	هُدًى ⑩	فَلَمَّآ	اَتٰىهَا	نُوۡدِىَ	يٰمُوۡسٰى ⑪ ؕ	اِنِّىۡۤ	اَنَا
उस आग पर	रहनुमाई	फिर जब	वो आया उसके पास	पुकारा गया	ऐ मूसा	बेशक मैं	मैं ही

رَبُّكَ	فَاخۡلَعۡ	نَعۡلَيۡكَ ۚ	اِنَّكَ	بِالۡوَادِ	الۡمُقَدَّسِ	طُوًى ⑫ ؕ	وَاَنَا
रब हूं तुम्हारा	पस उतार दो	अपने दोनों जूते	बेशक तुम	वादी में हो	मुक़द्दस	तुवा की	और मैं

اخۡتَرۡتُكَ	فَاسۡتَمِعۡ	لِمَا	يُوۡحٰى ⑬	اِنَّنِىۡۤ	اَنَا	اللّٰهُ	لَاۤ	اِلٰهَ
चुन लिया मैंने तुझे	पस ग़ौर से सुनो	उसे जो	वही की जाती है	बेशक मैं	मैं ही	अल्लाह हूं	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)

اِلَّاۤ	اَنَا	فَاعۡبُدۡنِىۡ ۙ	وَاَقِمِ	الصَّلٰوةَ	لِذِكۡرِىۡ ⑭	اِنَّ	السَّاعَةَ
मगर	मैं ही	पस इबादत करो मेरी	और क़ायम करो	नमाज़	मेरी याद के लिए	बेशक	क़यामत

اٰتِيَةٌ	اَكَادُ	اُخۡفِيۡهَا	لِتُجۡزٰى	كُلُّ نَفۡسٍۢ	بِمَا	تَسۡعٰى ⑮	فَلَا
आने वाली है	क़रीब है कि मैं	मैं ख़ुफ़िया रखूंगा उसे	ताकि बदला दिया जाए	हर नफ़्स	उसका जो	उसने कोशिश की	पस ना

يَصُدَّنَّكَ	عَنۡهَا	مَنۡ	لَّا يُؤۡمِنُ	بِهَا	وَاتَّبَعَ	هَوٰىهُ	فَتَرۡدٰى ⑯
हरगिज़ रोके तुझे	उससे	वो जो	नहीं वो ईमान रखता	उस पर	और वो पैरवी करता है	अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स की	वरना तू हलाक हो जाएगा

وَمَا	تِلۡكَ	بِيَمِيۡنِكَ	يٰمُوۡسٰى ⑰	قَالَ	هِىَ	عَصَاىَ ۚ	اَتَوَكَّؤُا
और क्या है	ये	तेरे दाऐं हाथ में	ऐ मूसा	कहा	ये	मेरी लाठी/असा है	मैं सहारा लेता हूं

عَلَيۡهَا	وَاَهُشُّ	بِهَا	عَلٰى غَنَمِىۡ	وَلِىَ	فِيۡهَا	مَاٰرِبُ
इस पर	और मैं पत्ते झाड़ता हूं	साथ इसके	अपनी बकरियों पर	और मेरे लिए	इसमें	फ़ायदे हैं

اُخۡرٰى ⑱	قَالَ	اَلۡقِهَا	يٰمُوۡسٰى ⑲	فَاَلۡقٰىهَا	فَاِذَا	هِىَ	حَيَّةٌ
कुछ दूसरे	फ़रमाया	डाल दो इसे	ऐ मूसा	तो उसने डाल दिया उसे	तो अचानक	वो	सांप था

تَسۡعٰى ⑳	قَالَ	خُذۡهَا	وَلَا	تَخَفۡ وقفة	سَنُعِيۡدُهَا	سِيۡرَتَهَا	الۡاُوۡلٰى ㉑
दौड़ता हुआ	फ़रमाया	पकड़ लो इसे	और ना	तुम डरो	अनक़रीब हम लौटा देंगे इसे	इसकी हालत पर	पहली

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاضْمُمْ	يَدَكَ	اِلٰى جَنَاحِكَ	تَخْرُجْ	بَيْضَآءَ	مِنْ غَيْرِ	سُوْٓءٍ	اٰيَةً
और मिला लो	अपने हाथ को	अपने बाज़ू (पहलू) के साथ	वो निकलेगा	सफ़ेद/रोशन	बग़ैर	ऐब के	निशानी

اُخْرٰى ﴿22﴾ لا	لِنُرِيَكَ	مِنْ اٰيٰتِنَا	الْكُبْرٰى ﴿23﴾ ج	اِذْهَبْ	اِلٰى فِرْعَوْنَ
दूसरी	ताकि हम दिखाएं तुझे	अपनी निशानियों से	बड़ी-बड़ी	जाओ	तरफ़ फ़िरऔन के

ع 1 24 10

اِنَّهٗ	طَغٰى ﴿24﴾ ع	قَالَ	رَبِّ	اشْرَحْ	لِيْ	صَدْرِيْ ﴿25﴾ لا	وَيَسِّرْ
बेशक वो	सरकश हो गया है	कहा	ऐ मेरे रब	खोल दे	मेरे लिए	मेरा सीना	और आसान कर दे

لِيْٓ	اَمْرِيْ ﴿26﴾ لا	وَاحْلُلْ	عُقْدَةً	مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿27﴾ لا	يَفْقَهُوْا	قَوْلِيْ ﴿28﴾ ص
मेरे लिए	काम मेरा	और खोल दे	गिरह	मेरी ज़बान की	(ताकि) वो समझ जाएं	मेरी बात

وَاجْعَلْ	لِّيْ	وَزِيْرًا	مِّنْ اَهْلِيْ ﴿29﴾ لا	هٰرُوْنَ	اَخِي ﴿30﴾ لا	اشْدُدْ
और बना दे	मेरे लिए	वज़ीर/मददगार	मेरे घर वालों में से	हारून	मेरे भाई को	मज़बूत कर दे

بِهٖٓ	اَزْرِيْ ﴿31﴾ لا	وَاَشْرِكْهُ	فِيْٓ اَمْرِيْ ﴿32﴾ لا	كَيْ	نُسَبِّحَكَ	كَثِيْرًا ﴿33﴾ لا
साथ इसके	क़ुव्वत/कमर मेरी	और शरीक कर दे उसे	मेरे काम में	ताकि	हम तस्बीह करें तेरी	कसरत से

وَّنَذْكُرَكَ	كَثِيْرًا ﴿34﴾ ط	اِنَّكَ	كُنْتَ	بِنَا	بَصِيْرًا ﴿35﴾	قَالَ	قَدْ	اُوْتِيْتَ
और हम याद करें तुझे	कसरत से	बेशक तू	तू ही है	हमें	ख़ूब देखने वाला	फ़रमाया	तहक़ीक़	तू दे दिया गया

سُؤْلَكَ	يٰمُوْسٰى ﴿36﴾	وَلَقَدْ	مَنَنَّا	عَلَيْكَ	مَرَّةً	اُخْرٰٓى ﴿37﴾ لا	اِذْ
सवाल अपना	ऐ मूसा	और अलबत्ता तहक़ीक़	एहसान किया था हमने	तुझ पर	एक बार	और भी	जब

اَوْحَيْنَآ	اِلٰٓى اُمِّكَ	مَا	يُوْحٰٓى ﴿38﴾ لا	اَنِ	اقْذِفِيْهِ	فِي التَّابُوْتِ
वही (इल्हाम) की हमने	तरफ़ तेरी मां के	जो	वही (इल्हाम) की जाती है	कि	डाल दे इसे	ताबूत में

فَاقْذِفِيْهِ	فِي الْيَمِّ	فَلْيُلْقِهِ	الْيَمُّ	بِالسَّاحِلِ	يَأْخُذْهُ	عَدُوٌّ
फिर डाल दे उसे	दरिया में	फिर ज़रूर डाल देगा उसे	दरिया	साहिल पर	पकड़ लेगा उसे	दुश्मन

© HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

لِیْ	وَعَدُوٌّ	لَّهٗ ؕ	وَاَلْقَیْتُ	عَلَیْكَ	مَحَبَّةً	مِّنِّیْ ۚ	وَلِتُصْنَعَ
मेरा	और दुश्मन	उसका	और डाल दी मैंने	तुझ पर	मोहब्बत	अपनी तरफ़ से	और ताकि तू परवरिश किया जाए

عَلٰی عَیْنِیْ ﴿39﴾	اِذْ	تَمْشِیْۤ	اُخْتُكَ	فَتَقُوْلُ	هَلْ	اَدُلُّكُمْ	عَلٰی مَنْ
मेरी आंखों के सामने	जब	चलती थी	बहन तेरी	फिर वो कहती थी	क्या	मैं रहनुमाई करूं तुम्हारी	इस पर जो

وقف لازم

یَّكْفُلُهٗ ؕ	فَرَجَعْنٰكَ	اِلٰۤی اُمِّكَ	كَیْ تَقَرَّ	عَیْنُهَا	وَلَا	تَحْزَنَ ؕ
किफ़ालत करेगा इसकी	तो लौटा दिया हमने तुझे	तरफ़ तेरी मां के	ताकि ठंडी हो	आंख उसकी	और ना	वो ग़म करे

وَقَتَلْتَ	نَفْسًا	فَنَجَّیْنٰكَ	مِنَ الْغَمِّ	وَفَتَنّٰكَ	فُتُوْنًا قف
और क़त्ल किया था तू ने	एक जान को	तो निजात दी हमने तुझे	ग़म से	और आज़माया था हमने तुझे	ख़ूब आज़माना

فَلَبِثْتَ	سِنِیْنَ	فِیْۤ اَهْلِ مَدْیَنَ ۙ	ثُمَّ	جِئْتَ	عَلٰی قَدَرٍ	یّٰمُوْسٰی ﴿40﴾
फिर ठहरा रहा तू	कई साल	अहले मदयन में	फिर	आ गया तू	मुक़र्रर अन्दाज़े पर	ऐ मूसा

وَاصْطَنَعْتُكَ	لِنَفْسِیْ ﴿41﴾ ۚ	اِذْهَبْ	اَنْتَ	وَاَخُوْكَ	بِاٰیٰتِیْ	وَلَا
और चुन लिया मैंने तुझे	अपने लिए	जाओ	तुम	और भाई तुम्हारा	साथ मेरी निशानियों के	और ना

تَنِیَا	فِیْ ذِكْرِیْ ﴿42﴾ ۚ	اِذْهَبَاۤ	اِلٰی فِرْعَوْنَ	اِنَّهٗ	طَغٰی ﴿43﴾ ۚۖ	فَقُوْلَا
तुम दोनो सुस्ती करना	मेरी याद में	दोनों जाओ	तरफ़ फ़िरऔन के	बेशक वो	सरकश हो गया है	पस दोनों कहो

لَهٗ	قَوْلًا	لَّیِّنًا	لَّعَلَّهٗ	یَتَذَكَّرُ	اَوْ	یَخْشٰی ﴿44﴾	قَالَا
उसे	बात	नर्म	शायद कि वो	वो नसीहत पकड़े	या	वो डर जाए	दोनों ने कहा

رَبَّنَاۤ	اِنَّنَا	نَخَافُ	اَنْ	یَّفْرُطَ	عَلَیْنَاۤ	اَوْ	اَنْ	یَّطْغٰی ﴿45﴾
ऐ हमारे रब	बेशक हम	हम डरते है	कि	वो ज़्यादती करेगा	हम पर	या	ये कि	वो सरकशी करेगा

قَالَ	لَا تَخَافَاۤ	اِنَّنِیْ	مَعَكُمَاۤ	اَسْمَعُ	وَاَرٰی ﴿46﴾	فَاْتِیٰهُ
फ़रमाया	ना तुम दोनों डरो	बेशक मैं	साथ हूं तुम दोनों के	मैं सुन रहा हूं	और मैं देख रहा हूं	पस दोनों जाओ उसके पास

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَقُوْلَآ	اِنَّا	رَسُوْلَا	رَبِّكَ	فَاَرْسِلْ	مَعَنَا	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ	وَلَا
फिर दोनों कहो	बेशक हम	रसूल हैं	तेरे रब के	पस भेज दे	साथ हमारे	बनी इस्राईल को	और ना

تُعَذِّبْهُمْ ؕ	قَدْ	جِئْنٰكَ	بِاٰيَةٍ	مِّنْ رَّبِّكَ ؕ	وَالسَّلٰمُ	عَلٰى مَنِ
तू अज़ाब दे उन्हें	तहक़ीक़	लाए हैं हम तेरे पास	निशानी	तेरे रब की तरफ़ से	और सलाम है	उस पर जो

اتَّبَعَ	الْهُدٰى (47)	اِنَّا	قَدْ	اُوْحِيَ	اِلَيْنَآ	اَنَّ	الْعَذَابَ
पैरवी करे	हिदायत की	बेशक हम	तहक़ीक़	वही की गई	तरफ़ हमारे	कि बेशक	अज़ाब है

عَلٰى مَنْ	كَذَّبَ	وَتَوَلّٰى (48)	قَالَ	فَمَنْ	رَّبُّكُمَا	يٰمُوْسٰى (49)	قَالَ
उस पर जो	झुठलाए	और मुंह मोड़े	उसने कहा	फिर कौन है	रब तुम दोनों का	ऐ मूसा	कहा

رَبُّنَا	الَّذِيْٓ	اَعْطٰى	كُلَّ شَيْءٍ	خَلْقَهٗ	ثُمَّ	هَدٰى (50)	قَالَ	فَمَا
हमारा रब	वो है जिसने	अता की	हर चीज़ को	सूरत उसकी	फिर	रहनुमाई की	कहा	पस क्या

بَالُ	الْقُرُوْنِ	الْاُوْلٰى (51)	قَالَ	عِلْمُهَا	عِنْدَ	رَبِّيْ	فِيْ كِتٰبٍ ۚ
हाल है	क़ौमों का	पहली	कहा	इल्म उनका	पास है	मेरे रब के	एक किताब में

لَا يَضِلُّ	رَبِّيْ	وَلَا	يَنْسَى (52) ۟	الَّذِيْ	جَعَلَ	لَكُمُ	الْاَرْضَ	مَهْدًا
नहीं भटकता	मेरा रब	और ना	वो भूलता है	वो जिसने	बनाया	तुम्हारे लिए	ज़मीन को	बिछौना

وَّسَلَكَ	لَكُمْ	فِيْهَا	سُبُلًا	وَّ اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً ؕ	فَاَخْرَجْنَا
और उसने जारी किया	तुम्हारे लिए	उसमें	रास्तों को	और उसने उतारा	आसमान से	पानी	फिर निकालीं हमने

بِهٖٓ	اَزْوَاجًا	مِّنْ نَّبَاتٍ	شَتّٰى (53)	كُلُوْا	وَارْعَوْا	اَنْعَامَكُمْ ؕ
साथ उसके	कई अक़्साम	पोदों में से	मुख़्तलिफ	खाओ	और चराओ	अपने मवेशियों को

اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّاُولِي النُّهٰى (54) ع	مِنْهَا	خَلَقْنٰكُمْ	وَفِيْهَا
बेशक	इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	अक़्ल वालों के लिए	इसी से	पैदा किया हमने तुम्हें	और इसी में

ع 2 30 11

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

نُعِيْدُكُمْ	وَمِنْهَا	نُخْرِجُكُمْ	تَارَةً اُخْرٰى ﴿55﴾	وَلَقَدْ	اَرَيْنٰهُ
हम लौटाएँगे तुम्हें	और इसी में से	हम निकालेंगे तुम्हें	दूसरी मर्तबा	और अलबत्ता तहक़ीक़	दिखाईं हमने उसे

اٰيٰتِنَا	كُلَّهَا	فَكَذَّبَ	وَاَبٰى ﴿56﴾	قَالَ	اَجِئْتَنَا	لِتُخْرِجَنَا
निशानियां अपनी	सारी की सारी	तो उसने झुठला दिया	और इंकार किया	उसने कहा	क्या आया है तू हमारे पास	ताकि तू निकाले हमें

مِنْ اَرْضِنَا	بِسِحْرِكَ	يٰمُوْسٰى ﴿57﴾	فَلَنَاْتِيَنَّكَ	بِسِحْرٍ	مِّثْلِهٖ
हमारी ज़मीन से	साथ अपने जादू के	ऐ मूसा	पस अलबत्ता हम ज़रूर लाएंगे तेरे पास	जादू	ऐसा ही

فَاجْعَلْ	بَيْنَنَا	وَبَيْنَكَ	مَوْعِدًا	لَّا نُخْلِفُهٗ	نَحْنُ	وَلَآ	اَنْتَ
पस मुक़र्रर कर	दर्मियान हमारे	और दर्मियान अपने	वादे का वक़्त	नहीं हम ख़िलाफ़ करेंगे उससे	हम	और ना	तुम

مَكَانًا	سُوًى ﴿58﴾	قَالَ	مَوْعِدُكُمْ	يَوْمُ	الزِّيْنَةِ	وَاَنْ	يُّحْشَرَ
एक जगह हो	हमवार	कहा	वादे का वक़्त तुम्हारा	दिन है	ज़ीनत (जशन) का	और ये कि	इकट्ठे किए जाऐंगे

النَّاسُ	ضُحًى ﴿59﴾	فَتَوَلّٰى	فِرْعَوْنُ	فَجَمَعَ	كَيْدَهٗ	ثُمَّ	اَتٰى ﴿60﴾	قَالَ
लोग	चाश्त के वक़्त	तो पलटा	फ़िरऔन	फिर उसने जमा की	चाल अपनी	फिर	आ गया	कहा

لَهُمْ	مُّوْسٰى	وَيْلَكُمْ	لَا تَفْتَرُوْا	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا	فَيُسْحِتَكُمْ
उन्हें	मूसा ने	अफ़सोस तुम पर	ना तुम गढ़ो	अल्लाह पर	झूठ	वरना वो फ़ना कर देगा तुम्हें

بِعَذَابٍ ج	وَقَدْ	خَابَ	مَنِ	افْتَرٰى ﴿61﴾	فَتَنَازَعُوْٓا	اَمْرَهُمْ	بَيْنَهُمْ
साथ अज़ाब के	और तहक़ीक़	वो नामुराद हुआ	जिसने	गढ़ लिया झूठ	तो वो झगड़ने लगे	अपने मामले में	आपस में

وَاَسَرُّوا	النَّجْوٰى ﴿62﴾	قَالُوْٓا	اِنْ	هٰذٰنِ	لَسٰحِرٰنِ	يُرِيْدٰنِ
और उन्होंने चुपके-चुपके की	सरगोशी	उन्होंने कहा	यक़ीनन	ये दोनों	अलबत्ता जादूगर हैं	वो दोनों चाहते हैं

اَنْ	يُّخْرِجٰكُمْ	مِّنْ اَرْضِكُمْ	بِسِحْرِهِمَا	وَيَذْهَبَا	بِطَرِيْقَتِكُمُ
कि	वो दोनों निकाल दें तुम्हें	तुम्हारी ज़मीन से	साथ अपने जादू के	और वो दोनों ले जाऐं	तुम्हारे तरीक़े को

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَفْلَحَ	وَقَدْ	صَفًّا ج	ائْتُوْا	ثُمَّ	كَيْدَكُمْ	فَاَجْمِعُوْا	الْمُثْلٰى 63
फ़लाह पा गया	और तहक़ीक़	सफ़ बना कर	आ जाओ	फिर	चाल अपनी	तो जमा करो	जो इंतिहाई मिसाली है

تُلْقِيَ	اَنْ	اِمَّآ	يٰمُوْسٰى	قَالُوْا	اسْتَعْلٰى 64	مَنِ	الْيَوْمَ
तुम डालो	ये कि	या तो	ऐ मूसा	उन्होंने कहा	ग़ालिब हुआ	वो जो	आज

اَلْقُوْا ج	بَلْ	قَالَ	اَلْقٰى 65	مَنْ	اَوَّلَ	نَّكُوْنَ	اَنْ	وَاِمَّآ
तुम डालो	बल्कि	कहा	डालें	जो	पहले	हों हम	ये कि	और या

مِنْ سِحْرِهِمْ	اِلَيْهِ	يُخَيَّلُ	وَعِصِيُّهُمْ	حِبَالُهُمْ	فَاِذَا
उनके जादू की वजह से	तरफ़ उसके	ख़्याल डाला गया	और लाठियां उनकी	रस्सियां उनकी	तो यकायक

قُلْنَا	مُّوْسٰى 67	خِيْفَةً	فِيْ نَفْسِهٖ	فَاَوْجَسَ	تَسْعٰى 66	اَنَّهَا
कहा हमने	मूसा ने	ख़ौफ़ को	अपने दिल में	तो महसूस किया	वो दौड़ रही हैं	कि बेशक वो

فِيْ يَمِيْنِكَ	مَا	وَاَلْقِ	الْاَعْلٰى 68	اَنْتَ	اِنَّكَ	لَا تَخَفْ
तुम्हारे दाएं हाथ में है	उसको जो	और डाल दो	ग़ालिब (रहोगे)	तुम ही	बेशक तुम	ना तुम डरो

سٰحِرٍ ط	كَيْدُ	صَنَعُوْا	اِنَّمَا	صَنَعُوْا ط	مَا	تَلْقَفْ
एक जादूगर की	चाल है	जो उन्होंने बनाया	बेशक	उन्होंने बनाया	उसको जो	वो निगल जाएगा

سُجَّدًا	السَّحَرَةُ	فَاُلْقِيَ	اَتٰى 69	حَيْثُ	السَّاحِرُ	يُفْلِحُ	وَلَا
सज्दे में	जादूगर	तो गिरा दिए गए	वो आए	जहां कहीं	जादूगर	फ़लाह पा सकता	और नहीं

اٰمَنْتُمْ	قَالَ	وَمُوْسٰى 70	هٰرُوْنَ	بِرَبِّ	اٰمَنَّا	قَالُوْٓا
ईमान ले आए तुम	कहा (फ़िरऔन) ने	और मूसा के	हारून	रब पर	ईमान लाए हम	कहने लगे

الَّذِيْ	لَكَبِيْرُكُمُ	اِنَّهٗ	لَكُمْ ط	اٰذَنَ	اَنْ	قَبْلَ	لَهٗ
जिसने	अलबत्ता बड़ा है तुम्हारा	बेशक वो	तुम्हें	मैं इजाज़त दूं	कि	इससे पहले	इस पर

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَّمَكُمُ	السِّحْرَ ج	فَلَاُقَطِّعَنَّ	اَيْدِيَكُمْ	وَ اَرْجُلَكُمْ	مِّنْ خِلَافٍ
सिखाया तुम्हें	जादू	तो अलबत्ता मैं ज़रूर काट डालूंगा	तुम्हारे हाथों को	और तुम्हारे पांवों को	मुख़ालिफ़ (सिम्त) से

وَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ	فِيْ جُذُوْعِ	النَّخْلِ ز	وَ لَتَعْلَمُنَّ	اَيُّنَآ
और अलबत्ता मैं ज़रूर सूली चढ़ाऊंगा तुम्हें	तनों पर	खजूर के दरख़्त के	और अलबत्ता तुम ज़रूर जान लोगे	कौन सा हम में से

اَشَدُّ	عَذَابًا	وَّ اَبْقٰى (71)	قَالُوْا	لَنْ	نُّؤْثِرَكَ	عَلٰى مَا
ज़्यादा सख़्त है	सज़ा देने में	और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला	उन्होंने कहा	हरगिज़ नहीं	हम तरजीह देंगे तुझे	उस पर जो

جَآءَنَا	مِنَ الْبَيِّنٰتِ	وَالَّذِيْ	فَطَرَنَا	فَاقْضِ	مَآ	اَنْتَ
आ गया हमारे पास	खुली निशानियों में से	और उस पर जिसने	पैदा किया हमें	पस तू फ़ैसला कर दे	जो	तू

قَاضٍ ط	اِنَّمَا	تَقْضِيْ	هٰذِهِ	الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا (72) ط	اِنَّآ	اٰمَنَّا
फ़ैसला करने वाला है	बेशक	तू फ़ैसला कर सकता है	इसी	दुनिया की ज़िंदगी का	बेशक हम	ईमान लाए हम

بِرَبِّنَا	لِيَغْفِرَ	لَنَا	خَطٰيٰنَا	وَمَآ	اَكْرَهْتَنَا	عَلَيْهِ	مِنَ السِّحْرِ ط
अपने रब पर	ताकि वो बख़्श दे	हमारे लिए	ख़ताएं हमारी	और उसे जो	मजबूर किया हमें तूने	उस पर	जादू की वजह से

وَاللّٰهُ	خَيْرٌ	وَّ اَبْقٰى (73)	اِنَّهٗ	مَنْ	يَّاْتِ	رَبَّهٗ	مُجْرِمًا
और अल्लाह	बेहतर है	और बाक़ी रहने वाला है	बेशक वो	जो	आएगा	अपने रब के पास	मुजरिम होकर

الثلثة

فَاِنَّ	لَهٗ	جَهَنَّمَ ط	لَا يَمُوْتُ	فِيْهَا	وَلَا	يَحْيٰى (74)	وَمَنْ	يَّاْتِهٖ
तो बेशक	उसके लिए	जहन्नम है	ना वो मरेगा	उसमें	और ना	वो ज़िंदा रहेगा	और जो	आएगा उसके पास

مُؤْمِنًا	قَدْ	عَمِلَ	الصّٰلِحٰتِ	فَاُولٰٓئِكَ	لَهُمُ	الدَّرَجٰتُ	الْعُلٰى (75) لا
मोमिन होकर	तहक़ीक़	उसने अमल किए	नेक	तो यही लोग हैं	उनके लिए	दर्जे हैं	बुलंद

جَنّٰتُ	عَدْنٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ط
बाग़ात	हमेशगी के	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 3 22 12

اَنْ	اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ	اَوْحَيْنَآ	وَلَقَدْ	تَزَكّٰى ﴿76﴾ ع	مَنْ	جَزٰٓؤُا	وَذٰلِكَ
कि	तरफ़ मूसा के	वही की हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	पाकीज़गी इख़्तियार करे	उसका जो	बदला है	और ये

يَبَسًا ۙ	فِى الْبَحْرِ	طَرِيْقًا	لَهُمْ	فَاضْرِبْ	بِعِبَادِىْ	اَسْرِ
ख़ुश्क	समुन्दर में	एक रास्ता	उनके लिए	पस बना लो	मेरे बंदों को	ले चलो रात को

بِجُنُوْدِهٖ	فِرْعَوْنُ	فَاَتْبَعَهُمْ	تَخْشٰى ﴿77﴾	وَّلَا	دَرَكًا	لَّا تَخٰفُ
साथ अपने लश्करों के	फ़िरऔन ने	तो पीछा किया उनका	तू डरेगा	और ना	पा लेने का	ना तुझे ख़ौफ़ होगा

قَوْمَهٗ	فِرْعَوْنُ	وَاَضَلَّ	غَشِيَهُمْ ﴿78﴾ ط	مَا	مِّنَ الْيَمِّ	فَغَشِيَهُمْ
अपनी क़ौम को	फ़िरऔन ने	और भटका दिया	ढांप लिया उन्हें	जिसने	समुन्दर से	तो ढांप लिया उन्हें

مِّنْ عَدُوِّكُمْ	اَنْجَيْنٰكُمْ	قَدْ	يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ	هُدٰى ﴿79﴾	وَمَا
तुम्हारे दुश्मन से	निजात दी हमने तुम्हें	तहक़ीक़	ऐ बनी इस्राईल	रहनुमाई की	और ना

الْمَنَّ	عَلَيْكُمُ	وَنَزَّلْنَا	جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ	وَوٰعَدْنٰكُمْ
मन्न	तुम पर	और उतारा हमने	तूर की दाएं जानिब का	और वादा किया हमने तुमसे

فِيْهِ	تَطْغَوْا	وَلَا	رَزَقْنٰكُمْ	مَا	مِنْ طَيِّبٰتِ	كُلُوْا	وَالسَّلْوٰى ﴿80﴾
इसमें	तुम सरकशी करो	और ना	रिज़्क़ दीं हमने तुम्हें	जो	पाकीज़ा चीज़ों में से	खाओ	और सलवा

فَقَدْ	غَضَبِىْ	عَلَيْهِ	يَّحْلِلْ	وَمَنْ	غَضَبِىْ ۚ	عَلَيْكُمْ	فَيَحِلَّ
तो तहक़ीक़	ग़ज़ब मेरा	जिस पर	उतरे	और वो जो	ग़ज़ब मेरा	तुम पर	वरना उतरेगा

وَعَمِلَ	وَاٰمَنَ	تَابَ	لِّمَنْ	لَغَفَّارٌ	وَاِنِّىْ	هَوٰى ﴿81﴾
और उसने अमल किए	और वो ईमान लाया	तौबा की	उसे जिसने	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला हूं	और बेशक मैं	वो हलाक हो गया

يٰمُوْسٰى ﴿83﴾	عَنْ قَوْمِكَ	اَعْجَلَكَ	وَمَآ	اهْتَدٰى ﴿82﴾	ثُمَّ	صَالِحًا
ऐ मूसा	तेरी क़ौम से	जल्दी ले आई तुझे	और क्या चीज़	वो हिदायत पर रहा	फिर	नेक

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَبِّ	اِلَيْكَ	وَعَجِلْتُ	عَلٰٓى اَثَرِىْ	اُولَآءِ	هُمْ	قَالَ
ऐ मेरे रब	तरफ़ तेरे	और जल्दी की मैंने	मेरे नक़्शे क़दम पर हैं	सब लोग	वो	कहा

مِنْۢ بَعْدِكَ	قَوْمَكَ	فَتَنَّا	قَدْ	فَاِنَّا	قَالَ	لِتَرْضٰى ﴿84﴾
तेरे बाद	तेरी क़ौम को	आज़माइश में डाला हमने	तहक़ीक़	पस बेशक हमने	फ़रमाया	ताकि तू राज़ी हो जाए

غَضْبَانَ	اِلٰى قَوْمِهٖ	مُوْسٰى	فَرَجَعَ	السَّامِرِىُّ ﴿85﴾	وَاَضَلَّهُمُ
सख़्त ग़ज़बनाक	तरफ़ अपनी क़ौम के	मूसा	पस पलटा	सामरी ने	और भटका दिया उन्हें

حَسَنًا ۬ۥ	وَعْدًا	رَبُّكُمْ	يَعِدْكُمْ	اَلَمْ	يٰقَوْمِ	قَالَ	اَسِفًا ۚ۬
अच्छा	वादा	तुम्हारे रब ने	वादा किया था तुमसे	क्या नहीं	ऐ मेरी क़ौम	कहा	ग़मगीन होकर

غَضَبٌ	عَلَيْكُمْ	يَّحِلَّ	اَنْ	اَرَدْتُّمْ	اَمْ	الْعَهْدُ	عَلَيْكُمُ	اَفَطَالَ
ग़ज़ब	तुम पर	उतरे	कि	चाहा तुमने	या	वो मुद्दत	तुम पर	क्या फिर तवील होगई

مَوْعِدَكَ	اَخْلَفْنَا	مَآ	قَالُوْا	مَّوْعِدِىْ ﴿86﴾	فَاَخْلَفْتُمْ	مِّنْ رَّبِّكُمْ
तेरे वादे के	ख़िलाफ़ किया हमने	नहीं	उन्होंने कहा	मेरे वादे के	तो ख़िलाफ़ किया तुम ने	तुम्हारे रब की तरफ़ से

فَقَذَفْنٰهَا	الْقَوْمِ	مِّنْ زِيْنَةِ	اَوْزَارًا	حُمِّلْنَآ	وَلٰكِنَّا	بِمَلْكِنَا
तो फेंक दिया हमने उन्हें	लोगों के	ज़ेवर में से	बोझ	उठवाए गए हम	बल्कि हम	अपने इख़्तियार से

جَسَدًا	عِجْلًا	لَهُمْ	فَاَخْرَجَ	السَّامِرِىُّ ﴿87﴾ ۙ	اَلْقَى	فَكَذٰلِكَ
मुजस्सम	एक बछड़ा	उनके लिए	फिर उसने निकाला	सामरी ने	डाल दिया	फिर इसी तरह

فَنَسِىَ ﴿88﴾ ؕ	مُوْسٰى ۬ۥ	وَاِلٰهُ	اِلٰهُكُمْ	هٰذَآ	فَقَالُوْا	خُوَارٌ	لَّهٗ
पस वो भूल गया	मूसा का	और इलाह	इलाह है तुम्हारा	यही	तो उन्होंने कहा	गाय की आवाज़	जिसकी थी

يَمْلِكُ	وَّلَا	قَوْلًا ۬ۥ	اِلَيْهِمْ	يَرْجِعُ	اَلَّا	يَرَوْنَ	اَفَلَا
वो इख़्तियार रखता	और नहीं	बात को	तरफ़ उनके	वो लौटाता	कि बेशक नहीं	वो देखते	क्या फिर नहीं

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 4 13 13

لَهُمْ	ضَرًّا	وَّلَا	نَفْعًا ﴿89﴾ ع	وَلَقَدْ	قَالَ	لَهُمْ	هٰرُوْنُ	مِنْ قَبْلُ
उनके लिए	किसी नुक़्सान का	और ना	किसी नफ़ा का	और अलबत्ता तहक़ीक़	कहा	उन्हें	हारून ने	इससे पहले

يٰقَوْمِ	اِنَّمَا	فُتِنْتُمْ	بِهٖ ج	وَاِنَّ	رَبَّكُمُ	الرَّحْمٰنُ	فَاتَّبِعُوْنِيْ
ऐ मेरी क़ौम	बेशक	आज़माइश में डाले गए तुम	इस के ज़रिए	और बेशक	रब तुम्हारा	रहमान है	पस पैरवी करो मेरी

وَاَطِيْعُوْٓا	اَمْرِيْ ﴿90﴾	قَالُوْا	لَنْ نَّبْرَحَ	عَلَيْهِ	عٰكِفِيْنَ	حَتّٰى
और इताअत करो	मेरे हुक्म की	उन्होंने कहा	हम तो हमेशा रहेंगे	इस पर	जम कर बैठने वाले	यहां तक कि

يَرْجِعَ	اِلَيْنَا	مُوْسٰى ﴿91﴾	قَالَ	يٰهٰرُوْنُ	مَا	مَنَعَكَ	اِذْ	رَاَيْتَهُمْ
लौट आए	तरफ़ हमारे	मूसा	कहा	ऐ हारून	किस चीज़ ने	मना किया तुझे	जब	तूने देखा उन्हें

ضَلُّوْٓا ﴿92﴾ لا	اَلَّا	تَتَّبِعَنِ ط	اَفَعَصَيْتَ	اَمْرِيْ ﴿93﴾	قَالَ	يَبْنَؤُمَّ
कि वो भटक गए हैं	कि ना	तू पैरवी करे मेरी	क्या फिर नाफ़रमानी की तूने	मेरे हुक्म की	कहा	ऐ मेरी मां के बेटे

لَا تَاْخُذْ	بِلِحْيَتِيْ	وَلَا	بِرَاْسِيْ ج	اِنِّيْ	خَشِيْتُ	اَنْ	تَقُوْلَ	فَرَّقْتَ
ना तुम पकड़ो	मेरी दाढ़ी को	और ना	मेरे सर को	बेशक मैं	डरा मैं	कि	तुम कहोगे	तफ़रक़ा डाल दिया तूने

بَيْنَ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	وَلَمْ	تَرْقُبْ	قَوْلِيْ ﴿94﴾	قَالَ	فَمَا	خَطْبُكَ
दर्मियान	बनी इस्राईल के	और ना	तुमने इंतिज़ार किया	मेरी बात का	कहा	तो क्या है	मामला तेरा

يٰسَامِرِيُّ ﴿95﴾	قَالَ	بَصُرْتُ	بِمَا	لَمْ	يَبْصُرُوْا	بِهٖ	فَقَبَضْتُ
ऐ सामरी	उसने कहा	देखा मैंने	उसे जो	नहीं	उन्होंने देखा	जिसे	पस मुटठी भर ली मैंने

قَبْضَةً	مِّنْ اَثَرِ	الرَّسُوْلِ	فَنَبَذْتُهَا	وَكَذٰلِكَ	سَوَّلَتْ	لِيْ
एक मुटठी	नक़्शे क़दम से	रसूल के	तो डाल दिया मैंने उसे	और इसी तरह	अच्छा करके दिखाया	मेरे लिए

نَفْسِيْ ﴿96﴾	قَالَ	فَاذْهَبْ	فَاِنَّ	لَكَ	فِي الْحَيٰوةِ	اَنْ	تَقُوْلَ
मेरे नफ़्स ने	कहा	पस जाओ	तो बेशक	तेरे लिए है	ज़िंदगी में	ये कि	तू कहता रहे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَا مِسَاسَ ص	وَاِنَّ	لَكَ	مَوْعِدًا	لَّنْ	تُخْلَفَهٗ ج	وَانْظُرْ
ना छूना	और बेशक	तेरे लिए	वादे का एक वक़्त मुक़र्रर है	हरगिज़ ना	तू पीछे छोड़ा जाएगा इससे	और देख

اِلٰٓى اِلٰهِكَ	الَّذِىْ	ظَلْتَ	عَلَيْهِ	عَاكِفًا ط	لَنُحَرِّقَنَّهٗ	ثُمَّ
तरफ़ अपने इलाह के	वो जो	रहा तू	उस पर	जम कर बैठने वाला	अलबत्ता हम ज़रूर जला डालेंगे उसे	फिर

لَنَنْسِفَنَّهٗ	فِى الْيَمِّ	نَسْفًا (97)	اِنَّمَآ	اِلٰهُكُمُ	اللّٰهُ	الَّذِىْ
अलबत्ता हम ज़रूर बिखेर देंगे उसे	दरया में	बिखेर देना	बेशक	इलाह तुम्हारा	अल्लाह है	वो जो

لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ط	وَسِعَ	كُلَّ	شَىْءٍ	عِلْمًا (98)	كَذٰلِكَ
नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही	उसने घेर रखा है	हर	चीज़ को	इल्म से	इसी तरह

نَقُصُّ	عَلَيْكَ	مِنْ اَنْۢبَآءِ	مَا	قَدْ	سَبَقَ ج	وَقَدْ	اٰتَيْنٰكَ
हम बयान करते हैं	आप पर	कुछ ख़बरें	वो जो	तहक़ीक़	गुज़र चुकीं	और तहक़ीक़	दिया हमने आपको

مِنْ لَّدُنَّا	ذِكْرًا (99) ۖ	مَنْ	اَعْرَضَ	عَنْهُ	فَاِنَّهٗ	يَحْمِلُ	يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
अपने पास से	ज़िक्र	जिसने	मुंह मोड़ा	इससे	तो बेशक वो	उठाएगा	दिन क़यामत के

وِزْرًا (100) لا	خٰلِدِيْنَ	فِيْهِ ط	وَسَآءَ	لَهُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	حِمْلًا (101) لا
एक भारी बोझ	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें	और बहुत बुरा है	उनके लिए	दिन	क़यामत के	बोझ उठाना

يَّوْمَ	يُنْفَخُ	فِى الصُّوْرِ	وَنَحْشُرُ	الْمُجْرِمِيْنَ	يَوْمَئِذٍ	زُرْقًا (102) ۚ
जिस दिन	फूंका जाएगा	सूर में	और हम इकट्ठा करेंगे	मुजरिमों को	उस दिन	नीली आंखों वाले

يَّتَخَافَتُوْنَ	بَيْنَهُمْ	اِنْ	لَّبِثْتُمْ	اِلَّا	عَشْرًا (103)	نَحْنُ	اَعْلَمُ
वो सरगोशियां करेंगे	आपस में	नहीं	ठहरे तुम	मगर	दस (दिन)	हम	ज़्यादा जानते हैं

بِمَا	يَقُوْلُوْنَ	اِذْ	يَقُوْلُ	اَمْثَلُهُمْ	طَرِيْقَةً	اِنْ	لَّبِثْتُمْ	اِلَّا
उसे जो	वो कहेंगे	जब	कहेगा	सबसे मिसाली उनका	तरीक़ा/रविश में	नहीं	ठहरे तुम	मगर

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

5 ع 15 14

نَسْفًا ۙ (105)	رَبِّيْ	يَنْسِفُهَا	فَقُلْ	عَنِ الْجِبَالِ	وَيَسْـَٔلُوْنَكَ	يَوْمًا ۧ (104)
बिखेर देना	मेरा रब	बिखेर देगा उन्हें	तो कह दीजिए	पहाड़ों के बारे में	और वो सवाल करते हैं आपसे	एक दिन

وَّلَآ	عِوَجًا	فِيْهَا	لَّا تَرٰى	صَفْصَفًا ۙ (106)	قَاعًا	فَيَذَرُهَا
और ना	कोई टेढ़ापन	उसमें	ना तुम देखोगे	चटियल बना कर	मैदान	पस वो छोड़ देगा उस (ज़मीन) को

وَخَشَعَتِ	لَهٗ ۚ	لَا عِوَجَ	الدَّاعِيَ	يَّتَّبِعُوْنَ	يَوْمَىِٕذٍ	اَمْتًا ؕ (107)
और दब जाएंगी	जिसके लिए	नहीं कोई कजी	पुकारने वाले की	वो पैरवी करेंगे	जिस दिन	कोई टीला

لَّا تَنْفَعُ	يَوْمَىِٕذٍ	هَمْسًا (108)	اِلَّا	تَسْمَعُ	فَلَا	لِلرَّحْمٰنِ	الْاَصْوَاتُ
ना फ़ायदा देगी	उस दिन	आहट के	सिवाय	तुम सुनोगे	तो ना	रहमान के लिए	आवाज़ें

لَهٗ	وَرَضِيَ	الرَّحْمٰنُ	لَهُ	اَذِنَ	مَنْ	اِلَّا	الشَّفَاعَةُ
उसके लिए	और वो पसंद करे	रहमान	जिसे	इजाज़त दे	उसकी	मगर	शफ़ाअत

يُحِيْطُوْنَ	وَلَا	خَلْفَهُمْ	وَمَا	بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ	مَا	يَعْلَمُ	قَوْلًا (109)
वो अहाता कर सकते	और नहीं	उनके पीछे है	और जो	उनके आगे है	जो	वो जानता है	बात को

خَابَ	وَقَدْ	الْقَيُّوْمِ ؕ	لِلْحَيِّ	الْوُجُوْهُ	وَعَنَتِ	عِلْمًا (110)	بِهٖ
वो नामुराद हुआ	और तहक़ीक़	क़ायम रहने वाले के	वास्ते ज़िंदा रहने वाले	चेहरे	और झुक जाएंगे	इल्म का	उसके

فَلَا	مُؤْمِنٌ	وَهُوَ	مِنَ الصّٰلِحٰتِ	يَّعْمَلْ	وَمَنْ	ظُلْمًا (111)	حَمَلَ	مَنْ
तो ना	मोमिन हो	जबकि वो	नेकियों में से	अमल करेगा	और जो कोई	ज़ुल्म को	उठाया	जिसने

عَرَبِيًّا	قُرْاٰنًا	اَنْزَلْنٰهُ	وَكَذٰلِكَ	هَضْمًا (112)	وَّلَا	ظُلْمًا	يَخٰفُ
अरबी	क़ुरआन	नाज़िल किया हमने इसे	और इसी तरह	किसी कमी/नुक़्सान से	और ना	ज़ुल्म से	वो डरेगा

يُحْدِثُ	اَوْ	يَتَّقُوْنَ	لَعَلَّهُمْ	مِنَ الْوَعِيْدِ	فِيْهِ	وَصَرَّفْنَا
वो पैदा कर दे	या	वो डर जाएं	शायद कि वो	वईदों/तम्बीहात में से	इसमें	और फेर-फेर कर लाए हम

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَهُمْ	ذِكْرًا ﴿113﴾	فَتَعٰلَى	اللّٰهُ	الْمَلِكُ	الْحَقُّ ج	وَلَا	تَعْجَلْ	بِالْقُرْاٰنِ
उनके लिए	कोई नसीहत	पस बहुत बुलंद है	अल्लाह	बादशाह	हक़ीक़ी	और ना	आप जल्दी करें	साथ क़ुरआन के

مِنْ قَبْلِ	اَنْ	يُّقْضٰٓى	اِلَيْكَ	وَحْيُهٗ ز	وَقُلْ	رَّبِّ	زِدْنِىْ
इससे पहले	कि	पूरी की जाए	तरफ़ आपके	वही उसकी	और कह दीजिए	ऐ मेरे रब	ज़्यादा कर दे मुझे

عِلْمًا ﴿114﴾	وَلَقَدْ	عَهِدْنَآ	اِلٰٓى اٰدَمَ	مِنْ قَبْلُ	فَنَسِىَ	وَلَمْ	نَجِدْ
इल्म में	और अलबत्ता तहक़ीक़	अहद लिया हमने	आदम से	इससे पहले	तो वो भूल गया	और नहीं	पाया हमने

لَهٗ	عَزْمًا ﴿115﴾ ع	وَاِذْ	قُلْنَا	لِلْمَلٰٓئِكَةِ	اسْجُدُوْا	لِاٰدَمَ	فَسَجَدُوْٓا	اِلَّآ
उसके लिए	कोई अज़्म	और जब	कहा हमने	फ़रिश्तों से	सज्दा करो	आदम को	तो उन्होंने सज्दा किया	सिवाए

ع 6 11 15

اِبْلِيْسَ ط	اَبٰى ﴿116﴾	فَقُلْنَا	يٰٓاٰدَمُ	اِنَّ	هٰذَا	عَدُوٌّ	لَّكَ	وَلِزَوْجِكَ
इब्लीस के	उसने इंकार किया	तो कहा हमने	ऐ आदम	बेशक	ये	दुश्मन है	तुम्हारा	और तुम्हारी बीवी का

فَلَا	يُخْرِجَنَّكُمَا	مِنَ الْجَنَّةِ	فَتَشْقٰى ﴿117﴾	اِنَّ	لَكَ
पस ना	वो हरगिज़ निकलवाए तुम दोनों को	जन्नत से	वरना तुम मुसीबत में पड़ जाओगे	बेशक	तुम्हारे लिए है

اَلَّا	تَجُوْعَ	فِيْهَا	وَلَا	تَعْرٰى ﴿118﴾ لا	وَاَنَّكَ	لَا تَظْمَؤُا	فِيْهَا	وَلَا
ये कि ना	तुम भूखे होगे	उसमें	और ना	तुम उरयां होगे	और बेशक तुम	ना तुम प्यासे होगे	उसमें	और ना

تَضْحٰى ﴿119﴾	فَوَسْوَسَ	اِلَيْهِ	الشَّيْطٰنُ	قَالَ	يٰٓاٰدَمُ	هَلْ	اَدُلُّكَ
तुम्हें धूप लगेगी	पस वसवसा डाला	तरफ़ उसके	शैतान ने	कहा	ऐ आदम	क्या	मैं रहनुमाई करूं तुम्हारी

عَلٰى شَجَرَةِ	الْخُلْدِ	وَمُلْكٍ	لَّا يَبْلٰى ﴿120﴾	فَاَكَلَا	مِنْهَا	فَبَدَتْ
दरख़्त पर	हमेशगी के	और बादशाहत के	जो ना पुरानी होगी	तो दोनों ने खा लिया	उसमें से	तो ज़ाहिर हो गईं

لَهُمَا	سَوْاٰتُهُمَا	وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ	عَلَيْهِمَا	مِنْ وَّرَقِ	الْجَنَّةِ ز
उन दोनों के लिए	शर्मगाहें उन दोनों की	और वो दोनों चिपकाने लगे	अपने ऊपर	पत्तों से	जन्नत के

HUDA INTERNATIONL WEL ARE FOUNDATION

وَعَصٰٓى	اٰدَمُ	رَبَّهٗ	فَغَوٰى ﴿121﴾ صلے	ثُمَّ	اجْتَبٰهُ	رَبُّهٗ	فَتَابَ
और नाफ़रमानी की	आदम ने	अपने रब की	तो वो भटक गया	फिर	चुन लिया उसे	उसके रब ने	पस वो मेहरबान हुआ

عَلَيْهِ	وَهَدٰى ﴿122﴾	قَالَ	اهْبِطَا	مِنْهَا	جَمِيْعًا	بَعْضُكُمْ	لِبَعْضٍ
उस पर	और उसने हिदायत बख़्शी	फ़रमाया	दोनों उतर जाओ	इससे	इकट्ठे	बाज़ तुम्हारे	बाज़ के

عَدُوٌّ ج	فَاِمَّا	يَاْتِيَنَّكُمْ	مِّنِّيْ	هُدًى ۙ	فَمَنِ	اتَّبَعَ	هُدَايَ
दुश्मन हैं	फिर अगर	आ जाए तुम्हारे पास	मेरी तरफ़ से	हिदायत	तो जिसने	पैरवी की	मेरी हिदायत की

فَلَا	يَضِلُّ	وَلَا	يَشْقٰى ﴿123﴾	وَمَنْ	اَعْرَضَ	عَنْ ذِكْرِيْ	فَاِنَّ
तो ना	वो भटकेगा	और ना	वो मुसीबत में पड़ेगा	और जिसने	ऐराज़ किया	मेरे ज़िक्र से	तो बेशक

لَهٗ	مَعِيْشَةً	ضَنْكًا	وَّنَحْشُرُهٗ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	اَعْمٰى ﴿124﴾	قَالَ
उसके लिए है	मईशत/गुज़रान	तंग	और हम उठाऐंगे उसे	दिन	क़यामत के	अंधा	वो कहेगा

رَبِّ	لِمَ	حَشَرْتَنِيْٓ	اَعْمٰى	وَقَدْ	كُنْتُ	بَصِيْرًا ﴿125﴾	قَالَ
ऐ मेरे रब	क्यों	उठाया तूने मुझे	अंधा	हालांकि तहक़ीक़	था मैं	देखने वाला	वो फ़रमाएगा

كَذٰلِكَ	اَتَتْكَ	اٰيٰتُنَا	فَنَسِيْتَهَا ج	وَكَذٰلِكَ	الْيَوْمَ	تُنْسٰى ﴿126﴾
इसी तरह	आई थीं तेरे पास	आयात हमारी	पस भूल गया तू उन्हें	और इसी तरह	आज	तू भुलाया जाएगा

وَكَذٰلِكَ	نَجْزِيْ	مَنْ	اَسْرَفَ	وَلَمْ	يُؤْمِنْۢ	بِاٰيٰتِ	رَبِّهٖ ط
और इसी तरह	हम बदला देते हैं	उसको जो	हद से गुज़र जाए	और ना	वो ईमान लाए	आयात पर	अपने रब की

وَلَعَذَابُ	الْاٰخِرَةِ	اَشَدُّ	وَاَبْقٰى ﴿127﴾	اَفَلَمْ	يَهْدِ	لَهُمْ	كَمْ
और अलबत्ता अज़ाब	आख़िरत का	ज़्यादा शदीद है	और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला	क्या फिर नहीं	रहनुमाई की	उनकी	कि कितनी ही

اَهْلَكْنَا	قَبْلَهُمْ	مِّنَ الْقُرُوْنِ	يَمْشُوْنَ	فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ط	اِنَّ
हलाक कीं हमने	इनसे पहले	बस्तियां	वो चलते-फिरते हैं	उनके घरों में	यक़ीनन

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 7 13 16

فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّاُولِي النُّهٰى ﴿128﴾ ع	وَلَوْلَا	كَلِمَةٌ	سَبَقَتْ
इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	अक़्ल वालों के लिए	और अगर ना होती	एक बात	जो गुज़र चुकी

مِنْ رَّبِّكَ	لَكَانَ	لِزَامًا	وَّاَجَلٌ	مُّسَمًّى ﴿129﴾ ط	فَاصْبِرْ	عَلٰى مَا
आपके रब की तरफ़ से	अलबत्ता हो जाता	लाज़िम (अज़ाब)	और वक़्त (अगर ना होता)	मुक़र्रर	पस सब्र कीजिए	उस पर जो

يَقُوْلُوْنَ	وَسَبِّحْ	بِحَمْدِ	رَبِّكَ	قَبْلَ	طُلُوْعِ الشَّمْسِ	وَقَبْلَ
वो कहते हैं	और तस्बीह कीजिए	साथ हम्द के	अपने रब की	पहले	सूरज तुलू होने से	और पहले

غُرُوْبِهَا ج	وَمِنْ	اٰنَآئِ	الَّيْلِ	فَسَبِّحْ	وَاَطْرَافَ	النَّهَارِ	لَعَلَّكَ
उसके ग़ुरूब होने से	और कुछ	घड़ियां	रात की	पस तस्बीह कीजिए	और किनारें पर	दिन के भी	ताकि आप

تَرْضٰى ﴿130﴾	وَلَا	تَمُدَّنَّ	عَيْنَيْكَ	اِلٰى مَا	مَتَّعْنَا	بِهٖٓ
आप राज़ी हो जाएं	और ना	हरगिज़ आप दराज़ करें	अपनी दोनों आंखें	तरफ़ उसके जो	फ़ायदा दिया हमने	साथ उसके

اَزْوَاجًا	مِّنْهُمْ	زَهْرَةَ	الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ	لِنَفْتِنَهُمْ	فِيْهِ ط	وَرِزْقُ
मुख़्तलिफ़ लोगों को	उनमें से	रौनक़ के लिए	दुनिया की ज़िंदगी की	ताकि हम आज़माऐं उन्हें	उसमें	और रिज़्क

رَبِّكَ	خَيْرٌ	وَّاَبْقٰى ﴿131﴾	وَاْمُرْ	اَهْلَكَ	بِالصَّلٰوةِ	وَاصْطَبِرْ	عَلَيْهَا ط
आपके रब का	बेहतर है	और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला	और हुक्म दीजिए	अपने घर वालों को	नमाज़ का	और क़ायम रहिए	उस पर

لَا نَسْئَلُكَ	رِزْقًا ط	نَحْنُ	نَرْزُقُكَ ط	وَالْعَاقِبَةُ	لِلتَّقْوٰى ﴿132﴾
नहीं हम सवाल करते आपसे	किसी रिज़्क़ का	हम	हम रिज़्क़ देते हैं आपको	और (अच्छा) अंजाम	तक़वा वालों के लिए है

وَقَالُوْا	لَوْلَا	يَاْتِيْنَا	بِاٰيَةٍ	مِّنْ رَّبِّهٖ ط	اَوَلَمْ	تَاْتِهِمْ
और वो कहते हैं	क्यों नहीं	वो लाता हमारे पास	कोई निशानी	अपने रब की तरफ़ से	क्या भला नहीं	आई उनके पास

بَيِّنَةُ	مَا	فِي الصُّحُفِ	الْاُوْلٰى ﴿133﴾	وَلَوْ	اَنَّآ	اَهْلَكْنٰهُمْ
वाज़ेह दलील	जो	सहीफ़ों में है	पहले	और अगर	बेशक हम	हलाक कर देते हम उन्हें

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَيْنَا	اَرْسَلْتَ	لَوْلَآ	رَبَّنَا	لَقَالُوْا	مِّنْ قَبْلِهٖ	بِعَذَابٍ
तरफ़ हमारे	भेजा तूने	क्यों ना	ऐ हमारे रब	अलबत्ता वो कहते	इससे पहले	साथ किसी अज़ाब के

وَنَخْزٰى (134)	نَّذِلَّ	اَنْ	مِنْ قَبْلِ	اٰيٰتِكَ	فَنَتَّبِعَ	رَسُوْلًا
और हम रुस्वा होते	हम ज़लील होते	कि	इससे पहले	तेरी आयात की	तो हम पैरवी करते	कोई रसूल

مَنْ	فَسَتَعْلَمُوْنَ	فَتَرَبَّصُوْا ج	مُّتَرَبِّصٌ	كُلٌّ	قُلْ
कौन	पस अनक़रीब तुम जान लोगे	तो तुम भी इंतिज़ार करो	इंतिज़ार करने वाले हैं	सब के सब	कह दीजिए

ع 8/7/17

اهْتَدٰى (135) ع	وَمَنِ	السَّوِيِّ	الصِّرَاطِ	اَصْحٰبُ
हिदायत पाई	और किसने	सीधे के	रास्ते	साथी हैं

© AL HUDA IN ER ATIONL WEL ARE FOUNDATION